मंत्र·तंत्र·यंत्र
त्रिपुर भैरवी यन्त्र
अक्टू०–९२

उत्पन्ना एकादशी अनुष्ठान

(दिनांक–२०-११-९२)

कई मुहूर्त ऐसे सिद्ध मुहूर्त होते हैं जिस दिन कोई कार्य विशेष सम्पन्न किया जाय तो उसका फल तत्काल ही प्राप्त होता है। होली, दीवाली, नवरात्रि इत्यादि विशिष्ट मुहूर्तों के बारे में तो सबको जानकारी रहती है। लेकिन इसके अतिरिक्त विशेष शास्त्रोक्त साधनात्मक मुहूर्तों की जानकारी बहुत कम लोगों को रहती है।

उत्पन्ना एकादशी एक ऐसा ही विशिष्ट मुहूर्त सिद्ध दिवस है जिस दिन उत्पत्ति, वृद्धि, विकास का अनुष्ठान विशेष रूप से सम्पन्न किया जाता है। उत्पन्ना का तात्पर्य है कि जो जीवन में नहीं है, उसको उत्पन्न करना और उसका विकास करना। यदि जीवन में लक्ष्मी की प्रचुरता नहीं है, यदि जीवन में पुत्र, पौत्र नहीं हैं यदि जीवन में सुख-सौभाग्य नहीं है, यदि जीवन में मानसिक शान्ति नहीं है, यदि जीवन में श्री, कीर्ति नहीं है, तो इन शक्तियों को जीवन में उत्पन्न करना आवश्यक है केवल उत्पन्न ही नहीं, उत्पन्न कर उनका विकास और वृद्धि करना भी आवश्यक है और इसके लिए उत्पन्ना एकादशी से श्रेष्ठ कोई मुहूर्त नहीं है।

इस वर्ष दिनांक २०-११-९२ को उत्पन्ना एकादशी है और मेरा सभी साधक भाई बहिनों से गृहस्थों से अनुरोध है कि वे इस दिन यह विशेष अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करें।

यह अनुष्ठान अत्यन्त ही सरल, सात्विक अनुष्ठान है और प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय सम्पन्न करना पड़ता है। प्रातः स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में सर्वप्रथम अपने गुरु का पूजन करें, गुरु पूजन पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करने के उपरान्त हाथ में संकल्प लेकर गुरुदेव से मानसिक आज्ञा प्राप्त करें कि मैं यह विशेष अनुष्ठान आज के दिन इस विशेष कार्य सिद्धि हेतु संपन्न कर रहा हूं और मेरा यह कार्य सिद्ध हो।

इस पूरे अनुष्ठान को सम्पन्न करने हेतु चार वस्तुओं की विशेष आवश्यकता है। उसकी व्यवस्था पहले से ही अवश्य कर लें—**जय विजय चक्र, उत्पन्ना शक्ति फल, आनन्द मण्डल लक्ष्मी यन्त्र, १२ देवी शक्ति चक्र** इसके अतिरिक्त पूजन में आने वाली अन्य सामग्री तथा एक नारियल जो कि पानी वाला हो, आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपने सामने एक थाली में स्वस्तिक बनाकर मध्य में **आनन्द मण्डल लक्ष्मी यन्त्र** स्थापित करें और एक घी का दीपक आगे जला दें, यदि पति-पत्नी दोनों पूजा कर रहे हों तो साथ-साथ बैठें तथा दो घी के दीपक जलावें। अब बारह शक्तियों का पूजन जो कि उत्पन्ना की मूल शक्तियां हैं, करना आवश्यक है, इस हेतु

वर्ष-१२

अंक-१०

अक्टूबर-१९९२

✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

अच्युताय नमस्तुभ्यं गुरवे परमात्मने ।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय चिद्घनानन्दमूर्तये ॥

अविनाशी, परमात्मा, स्वतन्त्र, चैतन्य और आनन्द की मूर्ति-स्वरूप हे गुरुदेव ! आपको नमस्कार है ।

समाचार एवं सूचनाएं

शारदीय नवरात्रि

पिछले दिनों मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान केन्द्र में बड़ी ही गतिविधियां रहीं नवरात्रि 'सिद्धेश्वरी महोत्सव' की तैयारियां जोर-शोर से हुईं, जिस रूप में ये तैयारियां हुईं उसी रूप में इसका श्रेष्ठ परिणाम शारदीय नवरात्रि में देखने को मिला।

इस बार के महोत्सव की सबसे निराली बात इसका दिल्ली में होना रहा और साधकों ने अपना पूरा उत्साह प्रगट किया, स्वयं पूज्य गुरुदेव ने इस बार नवरात्रि में अपने शिष्यों, साधकों को जितना समय दिया उतना शायद ही पहले कभी दिया हो। साधनात्मक परिचर्चा, विशेष अनुष्ठान, नवीन साधनाएं, गुरु उपदेश और साधकों को विशेष अनुभूति, इस पूरे महोत्सव के विशेष बिन्दु रहे। इस विशेष अनुष्ठान ने दिल्ली में मानों हलचल मचा दी, धन्य हैं वे साधक जिन्हें इस पूरे कल्पवास में गुरु सामीप्य प्राप्त हुआ।

दिल्ली के साधकों ने तो पूरा सहयोग दिया ही लेकिन धन्य हैं वे जिन्होंने इस महान अनुष्ठान में आयोजन का कार्य प्रमुख रूप से निभाया और तन-मन-धन से पूर्ण जिम्मेदारी ली। श्री सेलरग्रीन नम्बरदार, श्री महेन्द्र गुप्ता, श्री सुभाष शर्मा, श्री मोहन लाल चोपड़ा, श्री मयंक पाण्डेय आयोजन में आगे रहे। इतनी विराट साधक संख्या के बावजूद सब कुछ शान्त भाव से चल रहा था, कहीं कोई अव्यवस्था नहीं थी। यह सब तो पूज्य गुरुदेव की लीला है, उनकी कृपा है कि कहीं कोई न्यूनता रहती ही नहीं।

ऐसे आयोजन भारतवर्ष के सभी प्रमुख नगरों में हों और गुरुदेव वहां यात्रा कर साधकों के सौभाग्य का उदय करें, यही इच्छा है।

नवरात्रि शिविर में दो महत्वपूर्ण घोषणाएं हुईं, पूज्य प्रभु के आशीर्वाद से दो उपहार शिष्यों को प्रदान किये जा रहे हैं—

१—सिद्धेश्वरी सिद्ध यन्त्र—१९९३ के लिए एक नया सदस्य बनाने पर।
२—वशीकरण सिद्ध यन्त्र — ,, ,, दो नये सदस्य बनाने पर।

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

इस योजना के सम्बन्ध में पाठकों के पत्र निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं और जो नियम पत्रिका के अगस्त माह के अंक में प्रकाशित हुई थीं वे नियम अधिसंख्यक शिष्यों को मान्य हैं, क्योंकि इस योजना

के पीछे मूलभूत उद्देश्य तो सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तार करना है, उसके लिए भारत के ११ प्रमुख नगरों में सिद्ध श्रम-भवन का निर्माण करना है। पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि कब तक हम किराये के मकानों में अपनी संस्था का आयोजन करते रहेंगे, यह अपनी गरिमा के अनुकूल नहीं है, इस बात पर कुछ प्रमुख शिष्यों ने मीटिंग कर एक विशेष निर्णय लिया कि इस प्रकार तो धन एकत्र करने में बहुत अधिक समय लग जायेगा और **सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना** के अन्तर्गत जो उपहार दिये जा रहे हैं उसके कारण प्रतिमाह पत्रिका पर भी भार बहुत अधिक बढ़ जायेगा।

अतः शिष्यों की राय थी कि गोल्डन कार्ड योजना के अन्तर्गत यह धनराशि कम से कम इक्यावन हजार कर देनी चाहिए और उन्होंने पूज्य गुरुदेव से इस सम्बन्ध में यह निवेदन भी किया, परन्तु पूज्य गुरुदेव ने कहा कि यह उचित नहीं होगा, लेकिन योजना की विशालता को देखते हुए उन्होंने सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना के अन्तर्गत गोल्डन कार्ड होल्डर सदस्यों के लिए आवश्यक शुल्क जो कि उनके लिए एक धरोहर धनराशि रहेगी वह इकतीस हजार करने की स्वीकृति प्रदान की है अतः साधक बन्धु नोट कर लें कि अब इस महान् योजना में भाग लेने हेतु और सिद्धाश्रम साधक परिवार की विशाल योजनाओं को साकार करने हेतु उनका योगदान इकतीस हजार रुपये होना आवश्यक है।

यदि कोई साधक भाई बहिन इससे भी अधिक धनराशि सहयोग रूप में भेंट करना चाहें तो उनका स्वागत है।

शारदीय नवरात्रि शिविर में नये १५ सदस्यों ने गोल्डन कार्ड प्राप्त कर सिद्धाश्रम साधक परिवार की उन्नति में विशिष्ट सहयोग दिया है, उन सबको कोटि-कोटि धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

सदस्यता नवीनीकरण

पत्रिका के इस अंक के साथ एक मनीआर्डर फार्म भी संलग्न कर भेजा जा रहा है, पाठकों से निवेदन है कि इस फार्म को भर कर तुरन्त अवश्य भेज दें जिससे कि उनका नवीनीकरण उचित समय पर हो सके, समय बीतते हुए मालूम नहीं पड़ता और इस बार मन में दृढ़ संकल्प लेकर दीपावली तक यह फार्म भर कर अवश्य भिजवा दें। यहां गुरु धाम जोधपुर में उपस्थित कार्यालय व्यवस्थापकों के लिए हजार-हजार हाथ तो आप सभी साधक भाई-बहन ही हैं, आप सबकी सहभागिता प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक है। बार-बार पत्र लिखने में कितनी अधिक स्टेशनरी और डाक व्यय खर्च होता है। यह सब पत्रिका कार्यालय आपका ही तो है, फिर आलस्य में आकर सदस्यता नवीनीकरण के लिए विलम्ब क्यों ?

लक्ष्य चण्डी महायज्ञ

नवरात्रि की शुभ बेला में एक दिन प्रातः पूज्य गुरुदेव ने कहा कि मेरी इच्छा है कि निकट भविष्य में ही एक लक्ष्य चण्डी महायज्ञ अवश्य ही होना चाहिए, दुर्गा भगवती सिद्धि का यह अनुष्ठान अत्यन्त विशाल एवं भव्य

रूप से सम्पन्न हो। जब उनकी इच्छा हो गई है तो अवश्य ही इसके पीछे उनका कोई महान चिन्तन होगा, लक्ष्य चण्डी महायज्ञ में दुर्गा सप्तशती के एक लाख पाठ सम्पन्न किये जाते हैं और फिर हवन पूरे नौ दिनों तक १०८ कुण्डों पर चलता है, वे सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें अपने जीवन में लक्ष्य चण्डी महायज्ञ में भाग लेने का अवसर मिलता है। क्या ऐसा सम्भव है, और यदि है तो भारत के किस शहर में ऐसा आयोजन किया जा सकता है? कौन-कौन व्यक्ति इस आयोजन की जिम्मेदारी उठाने का संकल्प लेते हैं इस सम्बन्ध में आपके सुझाव, विचार आमन्त्रित हैं।

बुक स्टाल जानकारी प्रपत्र

पत्रिका के पिछले अंक में जो प्रपत्र छपा था उसका जवाब बहुत से सदस्यों ने भर कर भेजा है लेकिन प्रत्येक सदस्य द्वारा यह प्रपत्र भर कर अभी तक नहीं भेजा गया है ऐसा क्यों? क्या आपकी इस पत्रिका हेतु आप इतना भी समय नहीं दे सकते कि थोड़ी जानकारी एकत्र कर भेजें? इस सम्बन्ध में एक बार पुनः निवेदन है कि आप यह प्रपत्र भर कर शीघ्र अवश्य भिजवा दें।

आइडेन्टी कार्ड योजना

पत्रिका परिवार के सदस्य भारतवर्ष के कोने-कोने में और विदेशों में भी कार्यरत हैं, और इस बार से हमने गुरुदेव की आज्ञा से निर्णय लिया है कि प्रत्येक सदस्य का एक आइडेन्टी कार्ड बना कर कार्यालय में रखा जायेगा, जिससे कि सम्बन्धित साधक के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रहे। इससे कुछ विशेष निर्णय लेने में सुविधा रहती है, और जिस क्षेत्र विशेष के, कार्य विशेष के सम्बन्धित साधक सम्पर्क रखता है उस सम्बन्ध में उसके लिए उचित सलाह समय-समय पर पत्रिका कार्यालय द्वारा भेजी जा सकती है। इस हेतु सभी सदस्यों से निवेदन है कि निम्न जानकारी एक साफ कागज पर हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में लिख कर लौटती डाक से ही अवश्य भेज दें—

१-अपना नाम, २-पिता का नाम, ३-घर का पता, ४-कार्यालय/व्यापार स्थल का पता, ५-कार्य का स्वरूप/पद, ६-परिवार के सदस्यों के नाम, ७-टेलीफोन नम्बर, ८-पासपोर्ट साइज फोटो।

आपके द्वारा भेजी गई जानकारी गुप्त रखी जायेगी और निवेदन है कि ये जानकारी शीघ्रातिशीघ्र भेज दें।

आजीवन सदस्यता

आजीवन सदस्यता योजना जिसके अन्तर्गत पत्रिका सदस्यों को एकमुश्त २४००)रु० धनराशि जमा करा कर पत्रिका आजीवन निःशुल्क भेजी जाती थी, और यह धनराशि धरोहर के रूप में कार्यालय में जमा रहती थी, के अन्तर्गत अब यह आजीवन सदस्यता शुल्क ६६६६/-रुपये कर दिया गया है, जो पाठक दीपावली दिनांक २५-१०-९२ तक धनराशि भेज देंगे उनके लिए पुराना शुल्क २४००/-रु० ही लागू होगा, दीपावली के बाद यह नया शुल्क लागू किया जायेगा। ●

गुरु साधना सिद्धि ही तो आधार है समस्त सिद्धियों का

भावना के वश में भगवान होते हैं और एक प्रसिद्ध श्लोक में लिखा है कि-मन्त्र, तीर्थ, वैद्य और गुरु में पूर्ण आस्था ही सिद्धिप्रद कही गई है। सम्पूर्ण हृदय को चैतन्य और जाग्रत कर शंका और तर्क से रहित होकर सच्चे मन से की गई सेवा और आराधना द्वारा गुरु को पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है। यह तो एक सम्मोहन क्रिया है, जिसके द्वारा गुरु शिष्य के वश में हो जाता है और इस साधना में संवाद की आवश्यकता कहां है, गुरु की पैनी दृष्टि तो हर साधक पर, हर क्षण टिकी रहती है और गुरु शिष्य को परखते रहते हैं, उसे नीचे से आधार देकर कुम्हार की तरह ठोकते-पीटते रहते हैं और उसके पापों का क्षय करते रहते हैं और यही इच्छा रहती है कि शिष्य पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाय, ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो, उसके चक्रों का भेदन होकर वह सहस्रार सिद्धि प्राप्त करे।

शिष्य द्वारा अपने भटकने की स्थिति में हर एक को गुरु बना लेना उचित नहीं है, आजकल तो बातचीत में मित्र भी आपस में गुरु कहकर सम्बोधन करते हैं। क्या यह उचित है ?

शास्त्रोक्त कथन है कि शिष्य को गुरु बनाने से पहले उसमें छः गुणों को अवश्य ही देखना चाहिए—

१— जो कुलीन, उच्च वर्ण का सौम्य भाव एवं सरल जीवन से युक्त हो।

२— जो शिष्य की समस्याओं को उसकी व्यावहारिक कठिनाइयों को समझता हो, और उन कठिनाइयों को दूर करने का उपाय बताता हो।

३— जिसमें ज्ञान की गरिमा और गम्भीरता हो और अपने प्रवचनों के माध्यम से उस ज्ञान को शिष्यों को प्रदान करता रहे।

४— जो स्वस्थ, उन्नत शरीर का स्वामी हो और गरिमायुक्त हो।

५— जिसमें समस्त प्रकार की सधनाओं का सार हो और किसी एक विषय में नहीं अपितु सभी विषयों में पारंगत हो।

६— और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह कि जिसके पास बैठने से मन में अपूर्व शान्ति प्राप्त हो।

गुरु महिमा

रुद्रयामल तन्त्र के प्रथम खण्ड में लिखा है कि शिष्य के लिए संसार का आधार गुरु ही है, केवल मात्र गुरु की प्रसन्नता से ही साधक सिद्धाश्रम प्राप्त कर लेता है।

गुरु मूलं जगत् सर्वं गुरु मूलं परं तपः।
गुरोः प्रयास मात्रेण मोक्षंपाप्नोति सद्-वशी ।।

मुण्डमाल तन्त्र के पहले पटल पर कहा गया है कि एक मात्र गुरु ही शिष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले परम तत्व हैं और गुरु की प्रसन्नता के बिना करोड़ों साधनाओं तथा पुरश्चरण का कोई फल प्राप्त नहीं होता।

जो साधक गुरु साधना के बिना, केवल पुस्तक के आधार पर साधनाएं और मन्त्र जप करता है, और उसे यदि गुरु कृपा का आधार प्राप्त नहीं है तो उसकी साधना व्यर्थ है। गुरु द्वारा दिये गये शब्द ही साधना का आधार है इसलिए साधक को पूर्ण प्रयत्न कर गुरु की सामीप्यता अवश्य ही प्राप्त करनी चाहिए।

गुरुदेव तो त्रिगुणात्मक स्वरूप हैं

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आद्या शक्ति रूप को स्वयं में समाहित किये हुए साधारण आम आदमी सा दिखने वाला व्यक्तित्व अत्यन्त विलक्षण लीलाधारी है, सेवा में रत सेवक, साधक एवं विशिष्ट शिष्यों को भी समय-समय पर भरमाया करते हैं, माया का पर्दा उनकी खुली आंखों पर भी डालते रहते हैं, और यह सब करते हुए बिलकुल अनजान, कभी-कभी पूर्ण अज्ञानी की भूमिका निभाते हुए शिष्य से भी निचले स्तर पर स्वयं को प्रतिष्ठित कर मुस्कराते रहते हैं, अन्दर ही अन्दर कैसी अद्‌भुत माया है गुरु की, जो सहज ही जानी नहीं जा सकती, चर्म चक्षुओं से गुरु जैसा दिखता है, वैसा है नहीं, अन्तर्चक्षु खुलने पर ही कभी-कभी उसका दिव्य रूप परिलक्षित होता है, साक्षात्कार होता है उसके ब्रह्म रूप से, मगर हर पल गुरु का प्रयास रहता है कि शिष्य उसे समझे नहीं, दिव्य झांकी पाने का उसे पहिचानने का। इस दौर में जिस दिन गुरु अपनी हार स्वीकार कर लेता है, शिष्य का

सौभाग्य उदय होता है, उसके जीवन के पुण्यों का फल उसके समक्ष होता है, गुरु शिष्य को सीने से लगा लेता है, वह सिद्धि जिसे ब्रह्म सिद्धि कहा जाता है, पूर्णता मिलते ही शिष्य शिष्य नहीं रह जाता, गुरुत्व बन कर गुरु की ही आत्मा का पूर्ण चेतन अंश बन जाता है, शिव शिवा रूप में गुरु का वरद हस्त शिष्य के भाल पर आशीर्वाद की वर्षा करता है और यह वरदानमयी बेला ही शिष्य का शृंगार है और जीवन की पूर्णता है।

सांसारिक जीवन में तो नित्य नई बाधाएं आती ही हैं, क्योंकि साधक जब अपने गुरु की खोज में तल्लीन होता है तो उसके पाप कर्म कभी गृहस्थ रूप में, कभी सामाजिक आलोचना के रूप में उसके सामने आकर खड़े होते हैं और उसे रोकते हैं, लेकिन जो व्यक्ति यह ठान लेता है कि मुझे अपने इस जीवन में अपने पूर्व जन्म के गुरु की खोज करनी ही और उनके चरणों में बैठकर पूर्णता से समर्पण कर देना है, तभी वह पूर्ण शिष्य बन सकता है, अपने गुरु को प्राप्त कर सकता है।

जीवन का वास्तविक सौन्दर्य

जीवन में और केवल इस छोटे से ६० साल के जीवन में बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। जीवन का लक्ष्य और प्रयोजन प्राप्त किया जा सकता है, और यह स्थिति गुरु शिष्य को अपने समीप बैठा कर स्पष्ट करते हैं, इसलिए वह मार्ग दिखाते हैं जिस पर चल कर स्वस्थ और आनन्द युक्त जीवन व्यतीत किया जा सके, उसके बाह्य और अन्तः दोनों शरीर को पवित्र कर आत्मा और ब्रह्म से साक्षात्कार कर सकता है। जिस उद्देश्य के लिए उसका जन्म हुआ है उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्या आवश्यक है और किस प्रकार वह अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण रूप से निभा सकता है? यह मार्ग केवल सद्गुरु ही बता सकते हैं।

गुरु से मन्त्र का जन्म होता है, और मन्त्र से देवता उत्पन्न होते हैं, जो शिष्य गुरुमुख से महामन्त्र प्राप्त करता है और जो बीज देवता से उत्पन्न होता है उसको पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, देवता का शरीर बीज से उत्पन्न होता है, और गुरु की आज्ञानुसार उसकी मुक्ति होती है, इस प्रकार गुरु भावना से तो पूर्णभाव सिद्धि होती है।

मन्त्रे वा गुरुदेवे वा न भेदं यस्तु कल्पते। तस्य तुष्टा जगद्धात्री किन्न वद्य.द् दिने दिने ॥

गुरु के प्रसन्न होने पर ही परम प्रभु परमात्मा और देवी भगवती प्रसन्न होती हैं, और गुरु के प्रसन्न न होने पर उनकी कृपा न मिलने पर वे भी रुष्ट हो जाते हैं। इसलिए संसार सागर को पार करने में गुरु ही कर्ता, धर्ता, हर्ता और मोक्ष प्रदान करने वाले हैं।

गुरुः कर्ता गुरुर्हर्ता गुरु माता मही तले। गुरु सन्तोष मात्रेण तुष्टाः स्युः सर्वे देवताः ॥
गुरु तुष्टे शिवस्तुष्टौ रुष्टे रुष्टस्त्रिलोचनः। गुरौ तुष्टे शिवे तुष्टा तुष्टे रुष्टा च सुन्दरि ॥

गुरु ही इष्ट

शास्त्रों में गुरु की महिमा को सर्वाधिक क्यों स्वीकार किया गया है? इसलिए कि हमने ईश्वर को देखा नहीं, हमने जगदम्बा भवानी, शिव या विष्णु के दर्शन भी नहीं किये, हम उन्हें पूर्ण रूप से पहिचानते भी नहीं और हमें इस बात का ज्ञान भी नहीं कि उनको प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए। पर शिष्य और परम पिता

परमात्मा अर्थात् सम्पूर्ण इष्ट के बीच एक कड़ी है जिसे गुरु कहा जाता है। यह गुरु आपको भी पहिचानता है और गुरु का परिचय इष्ठ से भी है। इसलिए गुरु के माध्यम से ही इष्ट तक पहुंचा जा सकता है, उसके सम्पूर्ण स्वरूप के साक्षात् दर्शन किये जा सकते हैं। गुरु के बताये मार्ग पर चल कर ही हम अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, केवल गुरु ही शिष्य को सही दिशा निर्देश दे सकते हैं, उसकी उंगली पकड़ कर सही रास्ते पर चला सकते हैं, इसीलिए शास्त्रों में गुरु के महत्व को एक स्वर से स्वीकार किया गया है।

"गुरु" शब्द कहने का अर्थ

रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है कि गकार सिद्धिदायक है और रेफ पाप का दाह करने वाला है, उकार को शुभ कहा गया है, इस प्रकार इन तीनों के समन्वित स्वरूप को "**गुरु**" शब्द से सम्बोधित किया गया है।

कंकाल मालिनी तन्त्र के पहले पटल में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि 'गुरु' शब्द के दोनों अक्षर क्रमशः निर्गुण और परब्रह्म हैं, एक प्रकार से कहा जाय तो यह गोपनीय महामन्त्र है, और संसार के सभी मन्त्रों से श्रेष्ठ है।

गुरु तन्त्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जिसकी जीभ के अग्रभाग में गुरु शब्द रहता हैं, उसे जीवन में व्यर्थ का कोई मोह नहीं रहता, उसे वेद और शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रहती, केवल मात्र 'गुरु' के उच्चारण से ही ब्रह्म हत्या दूर हो जाती है परशुराम अपनी माता के वध से और इन्द्र ब्रह्म हिंसा के पाप से केवल 'गुरु' शब्द के उच्चारण करने से ही मुक्त हुए थे।

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य दाहकः। उकार शम्भुरित्युक्तस्त्रितयात्मा गुरुः स्मृताः॥
निर्गुणं च परं ब्रह्म गुरुरित्यक्षर-द्वयम्। महामन्त्रं महादेवी गोपनीयं परात्परम्॥
गुरुरित्यक्षरं यस्य जिह्वाग्रे देवि वर्तते। तस्य किं विद्यते मोहः पाठेवदस्व किं वृथा॥
गुकारोच्चारण मात्रेण ब्रह्महत्या व्यपोहति। उकारोच्चारण मात्रेण मुच्यते जन्म पातकः॥

वस्तुतः गुरु की महत्ता और गुरु मन्त्र जप को तन्त्र ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्व दिया है।

गुरु कृपा तो निरन्तर प्रवाहित है

जिस दिन शिष्य अपने आप को गुरु चरणों में समर्पित कर देता है गुरु पूजन को आधार बना लेता है तथा गुरु साधना और गुरु मन्त्र उसके रोम-रोम से बोलने लगते हैं, तब शिष्य एक नये सिद्धि के मार्ग पर चल पड़ता है और तब वह "निगुरा" नहीं रहता। गुरु से युक्त हो जाता है, उसके जीवन में वास्तविक सौन्दर्य आ जाता है। मन के भ्रम एक के बाद एक दूर होने लगते हैं, भीतर ही भीतर एक नया प्रकाश उदय होने लगता है।

चिन्तन से, प्राणों से एक स्थिति बन जाती है तो गुरु सिद्धि की स्थिति शिष्य को प्राप्त हो जाती है, प्रेम और भावातिरेक में शिष्य को हृदय से लगा सब कुछ न्योछावर कर देता है, अपना चिन्तन, अपना ज्ञान, अपनी तपस्या, साधना सिद्धि सब कुछ प्रवाहित कर देता है शिष्य के सिर पर हाथ फेर ब्रह्मरंध्र खोल देता है, दे देता है वह ब्रह्म सिद्धि जिसे योगी, ऋषि-मुनि, देवी-देवता भी पाने को आतुर रहते हैं, ब्रह्म से साक्षात्कार की यही निष्काम सिद्धि, गुरु का आशीर्वाद और वरदान बन जाती है। शिष्य में, सेवक में, साधक में भोग और मोक्ष देकर पूर्णता देने वाली गुरु सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि कही गई है, शत् शत् नमन है, गुरु की अहेतुकी कृपा हो—

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजामूलं गुरुर्पदं। वेद मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा॥

तांत्रिक षट्कर्म

तंत्र की ये छः महाविद्याएं

तंत्र साधना का कोई भी सिद्धान्त हो अथवा स्वरूप हो, छः तांत्रिक कर्मों को विशेष महत्व दिया गया है और यह भी देखने को मिला है कि ज्यादातर लोग इन छः साधनाओं को ही तन्त्र शास्त्र मानते हैं जो कि उचित नहीं है, अधकचरे ज्ञान से भरी पुस्तकों में इन विद्याओं का जिस प्रकार से विवरण दिया गया है उससे इस ज्ञान के प्रति भ्रम और भी अधिक फैल गया है। तन्त्र का तात्पर्य है कि **"तन्यते ज्ञान मनैन इति तन्त्रम्"** अर्थात् जिस शास्त्र के पठन पाठन तथा अनुसरण से ज्ञान की वृद्धि होती है उस शास्त्र का नाम तन्त्र है।

जिस प्रकार ब्रह्मा से वेदों की उत्पत्ति हुई, उसी प्रकार तन्त्र के रचयिता भगवान शिव हैं और आदिगुरु शिव ने गुरु शिष्य परम्परा द्वारा जिसे 'श्रुति' कहा जाता है उसी से तन्त्र का विस्तार हुआ, और तन्त्र विज्ञान में ही मन्त्र समाहित है, तन्त्र शास्त्र के केवल अध्ययन से इसके सम्पूर्ण रहस्यों का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, बल्कि आचरण और कर्म से ही इसका सम्पूर्ण बोध हो पाता है।

तन्त्र शास्त्र में केवल शक्ति को ही प्रमुख स्थान दिया गया है। जिस प्रकार शिव की शक्ति कुण्डलिनी जब शिव से पृथक हो जाती है तो शिव भी शव बन जाते हैं, अतः शिव पूजा का मूल रूप शिव शक्ति की ही पूजा है, और मनुस्मृति में वेदों के सम्बन्ध में अधिकार केवल कुछ विशेष व्यक्तियों को ही बताया गया है, जब कि तन्त्र के सम्बन्ध में किसी प्रकार का जाति-भेद लिंग-भेद नहीं है।

तन्त्र विद्या में प्रवीणता के लिए संसार त्याग अर्थात् संन्यास धारण करने की आवश्यकता नहीं है, संसार में रह कर ही परमपद प्राप्त हो सकता है, जिनको यदि पथ प्रदर्शक अर्थात् गुरु नहीं मिलते हैं, उनके लिए इस मार्ग पर चलना बड़ा ही कठिन हो जाता है, लेकिन जिसे गुरु प्राप्त हो जाते हैं उनके लिए इस कलियुग में यह तन्त्र ही सबसे सहज मार्ग है।

तन्त्र की जिन छः विद्याओं का उल्लेख कर रहे थे वे निम्नवत् हैं—

शान्ति-वश्य-स्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा। मारणानि प्रशंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः ॥

अर्थात् १-शान्ति, २-वश्य (वशीकरण), ३-स्तम्भन, ४-विद्वेषण, ५-उच्चाटन और ६-मारण। ये षट्कर्म ऋषियों द्वारा कहे गये हैं।
(उड्डीश तन्त्र, सांख्यायन तन्त्र)

अब इन कर्मों के लक्षण हैं—

१-शान्ति कर्म

नाना रोगैः कृतिमैश्च नाना चेष्टा क्रमेण च। विष-भूत प्रयोगेषु निराशः शान्तिरीरिता॥

रोग-कृत्या ग्रहादीनां निरासः शान्तिरीरिता।

अर्थात् नाना प्रकार के रोग, नाना प्रकार की चेष्टाओं (क्रियाओं, विधियों) से निर्मित विष, भूत आदि प्रयोगों (अभिचार) कृत्या और दुष्ट ग्रहों का निराकरण करना "शान्ति कर्म" कहा जाता है।

२-वश्य कर्म (वशीकरण)

वश्यं जनानां सर्वेषां वात्सल्यं हृद्-गतं स्मृतम्। (सांख्यायन तन्त्र)

वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम्। (उड्डीश तन्त्र)

अर्थात् जिससे सभी जीवों (स्त्री-पुरुषों) को वश में किया जाता है और सबके हृदय में अपने प्रति वात्सल्य (प्रेम) पैदा किया जाता है उसे वशीकरण कहते हैं। स्त्री-पुरुष वशीकरण, राज-वशीकरण, आकर्षण, मोहन आदि वश्य-कर्म के भेद हैं।

३-स्तम्भन

स्तम्भनं रोधनं पुत्र ! सर्व-कर्म सु निश्चितम्। (सांख्यायन तन्त्र)

प्रवृत्ति-रोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम्। (उड्डीश तन्त्र)

अर्थात् सभी कार्यों और सभी प्राणियों की गति को रोक देना ही "स्तम्भन" है। मनुष्य स्तम्भन, बुद्धि स्तम्भन, शस्त्र स्तम्भन, आसन स्तम्भन, अग्नि स्तम्भन आदि 'स्तम्भन' के भेद हैं।

४-विद्वेषण

मित्रस्य कलहोत्पत्तिर्विद्वेषणमुदाहृतम्। (सांख्यायन तन्त्र)

स्निग्धानां द्वेष-जननं मिथो विद्वेषणमतम्। (उड्डीश तन्त्र)

अर्थात् मित्रों तथा घनिष्ट सम्बन्धियों से बैर करा देना 'विद्वेषण' कहलाता है।

५-उच्चाटन

बलं बुद्धि-भ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदं भुवि। (सांख्यायन तन्त्र)

उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम्। (उड्डीश तन्त्र)

अर्थात् बल और बुद्धि को भ्रमित कर देने तथा किसी को उसके स्थान से दूर कर देने को 'उच्चाटन' कहा जाता है। भ्रामण और उन्मत्तीकरण आदि 'उच्चाटन' के भेद हैं।

६-मारण

प्राणितां प्राण-हरणं मारणं समुदाहृतम्। (सांख्यायन तन्त्र, उड्डीश तन्त्र)

अर्थात् शत्रु को भयानक कष्ट देना, कुटुम्ब विच्छेदन, रोगों की उत्पत्ति, पीड़ा इत्यादि 'मारण' कर्म के भेद हैं।

इन छः कर्मों में शान्ति कर्म केवल अपने गुरु और इष्ट की पूजा, जप, साधना से ही सिद्ध हो जाता है, लेकिन शेष पांच के लिए विशेष पद्धति आवश्यक है।

उड्डीश तन्त्र के अनुसार वशीकरण से स्तम्भन श्रेष्ठ है, स्तम्भन से मोहन और मोहन से विद्वेषण तथा विद्वेषण से उच्चाटन और अन्त में उच्चाटन से श्रेष्ठ मारण तन्त्र है। मारण तन्त्र से अधिक प्रभावशाली कोई तन्त्र नहीं है।

ये सभी प्रयोग प्रकृति के सामान्य नियमों के विपरीत हैं और इन विपरीत नियमों को अपने अनुकूल कर इन्हें सिद्ध करने हेतु विशेष साधना आवश्यक है। लेकिन **दत्तात्रेय तन्त्र** के अनुसार जीवन में कभी ऐसे अवसर आ ही जाते हैं जब व्यक्ति हर तरह से परेशान हो जाता है तो उसे ये पांच कर्म करने ही पड़ते हैं। वे परिस्थितियां इस प्रकार से हैं—यदि किसी ने उसका घर, जमीन, पुत्र, धन, स्त्री का हरण कर लिया हो, प्राणों पर संकट आ गया हो तो ऐसे दुष्ट को दण्ड देने के लिए ये तांत्रिक प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए। लेकिन किसी भी स्थिति में व्यर्थ आजमाने के उद्देश्य से इन प्रयोगों को नहीं करना चाहिए, अन्यथा ऐसे मूर्ख को लाभ के स्थान पर हानि ही होती है।

हानि से कैसे बचें

तांत्रिक कर्म करने से पहले साधक को कुछ विशेष सावधानियां रखनी आवश्यक है, सर्वप्रथम तो उसको यह निर्णय लेना है कि परिस्थिति ऐसी आ ही गई है कि उसे ये विशेष तांत्रिक प्रयोग करने ही पड़ेंगे, तभी वह ये प्रयोग करे। सर्वप्रथम अपनी रक्षा के लिए इष्ट देवता की साधना अवश्य करे और इष्ट साधना के साथ गुरु साधना भी आवश्यक है, क्योंकि जहां साधक का इष्ट बली होता है और वह गुरु की शरण में होता है तो उसकी रक्षा अवश्य ही होती है और उसे किसी भी प्रकार की हानि नहीं उठानी पड़ती है। तत्पश्चात् मन्त्र सिद्ध करने के लिए उस विशेष साधना का पुरश्चरण प्रयोग आवश्यक है। पुरश्चरण विधान के सम्बन्ध में पत्रिका के अगस्त अंक में (पृष्ठ संख्या १७ १८ पर) विवरण दिया गया है। उस विधान से पुरश्चरण कर मन्त्र को सिद्ध करें और जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तो वह संकल्प लेकर विशेष अनुष्ठान सम्पन्न करे।

उड्डीश तन्त्र में भगवान शिव ने कहा कि-जिस प्रकार चन्द्रमा के बिना रात्रि, सूर्य के बिना दिन तथा राजा के बिना राज्य सूना है उसी प्रकार बिना गुरु कृपा के मन्त्र सिद्ध नहीं हो सकता। गुरु आज्ञा से ही इन प्रयोगों में प्रवृत्त हों, गुरु का ही इस तन्त्र पर पूर्ण अधिकार होता है।

वास्तव में साधक को इष्ट पूजा तथा गुरु पूजा तो नियमित रूप से अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। क्योंकि यह तो साधक के लिए एक प्रकार से "इन्श्योरेंस" (बीमा) है जोकि विपरीत परिस्थितियों में उसके लिए रक्षा कवच बनकर खड़े हो जाते हैं।

पत्रिका के अगले अंकों में उपरोक्त तांत्रिक कर्मों के सम्बन्ध में कुछ विशेष सामग्री दी जायेगी, जिनसे साधक अवश्य ही लाभ उठाएंगे। ●

नवग्रह शान्ति एवं सिद्धि

पूज्य गुरुदेव के पास प्राचीन पाण्डुलिपियों का भण्डार है, इन हस्तलिखित ग्रन्थों में कुछ प्रयोग तो अत्यन्त ही श्रेष्ठ रूप में साधकों के लिए दिये हुए हैं। ग्रह सम्बन्धी दोष निवारण हेतु एक विशेष प्रयोग नवग्रह स्तोत्र दिया गया है, जिसे साधक सम्पन्न कर ग्रह-बाधा-दोष शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इसमें यह ध्यान रखें कि **नवग्रह यन्त्र** स्थापित कर इसका पूजन कर इस श्लोक का ११ बार अवश्य पाठ करें, कितना भी भयंकर ग्रह दुष्प्रभाव हो, वह शान्त हो जाता है।

ॐ ह्रां ह्रीं सः मे शिरः पातु श्री सूर्य ग्रह पतिः। ॐ घौं सौं श्रौं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजकः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां सः करो पातु ग्रह सेनापतिः कुजः। पायादशं ॐ ह्रौं ह्रौं ह्रां सः पादौ ज्ञो नृपबालकः। ॐ श्रौं श्रौं श्रौं सः कटिं पातु पायादमरपूजितः। ॐ ह्रौं ह्रीं सः दैत्य पूज्यो हृदयं परिरक्षतु। ॐ शौं शौं सः पातु नाभिं मे ग्रह प्रेष्यः शनैश्चरः। ॐ छौं छां छौं सः कण्ठ देशं श्री राहुर्देव मर्दकः। ॐ फौं फां फौं सः शिखी पातु सर्वांगमभितोऽवतु। ग्रहाश्चैते भोग देहा नित्यास्तु स्फुटित ग्रहाः। एतदशांश सम्भूताः पातु नित्यं तु दुर्जनात्। अक्षयं कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह दैवतम्। पठेद् वा पाठयेद् वापि धारयेद् यो जनः शुचिः। स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभां त्रिदशस्तुयाम्। तव स्नेह वशादुक्तं जगन्मंगल कारकम् ग्रह यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टमक्षयमाप्नुयात्॥

इस प्रयोग को मैंने स्वयं सम्पन्न किया है, और जब विपरीत ग्रह दशा में कुछ ग्रह विशेष के कारण विशेष पीड़ा हो रही थी, तो इस कवच का ११ दिन तक नित्य पाठ करने से बड़ी ही अनुकूलता प्राप्त हुई। ●

जीवन में मिटाना है, कष्ट-रोग-पीड़ा-शत्रु

तो कीजिए

भैरव पूजा–साधना–आराधना

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है, जब तक भैरव पूजन नहीं हो जाता तब तक मूल यज्ञ भी प्ररम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं और विश्व के अश स्वयं शिव स्वरूप और महाशक्ति काली के सेवक हैं। इसीलिए इन्हें काल भैरव का नाम दिया गया है। किसी भी गांव में चले जाइये कोई मन्दिर अथवा पूजा स्थान होगा या नहीं लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हैं, लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को काल भैरवाष्टमी दिवस है, और यह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में काल भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्वप्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक हैं।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु "काल भैरव साधना" कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथो हाथ मिलता है, इसलिए कलियुग में गणपति, चण्डी

और भैरव की साधना पूर्ण रूप से महत्वपूर्ण मानी गयी हैं।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गयी है, क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाओं का आबद्ध हो जाता है और उस साधना में साधक को किसी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती हैं, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं की साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसलिए आज के युग में अन्य साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका मूल तथ्य निम्न प्रकार से है—

१-जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।

२-जीवन की बाधाओं और परेशानियों को दूर करने के लिए।

३-जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।

४-शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।

५-आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।

६-जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।

७-शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।

८-जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।

९-राज्य से आने वाली बाधाओं के अकारण भय से मुक्ति के लिए।

१०-जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।

११-चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

१२-समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो आदि के लिए भी 'काल भैरव साधना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसलिए तो शास्त्रों में कहा गया है कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, वे अपने जीवन में काल भैरव साधना अवश्य करते हैं, जो वास्तव में जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे काल भैरव साधना अवश्य करते हैं। जो अपने जीवन में चाहते हैं कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय हैं, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते वे अवश्य ही

काल भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। उच्चकोटि के योगी, संन्यासी काल भैरव साधना तो करते ही हैं, जो श्रेष्ठ व्यापारी हैं वे भी अपने पण्डितों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रुचि रखते हैं और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

दिनांक १७ ११-८२ मंगलवार मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी कालाष्टमी, महाकाल भैरवाष्टमी तथा महाकाल जयन्ती है और भैरव साधना हेतु उस दिन का सबसे अधिक महत्व है। भैरव के अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों हेतु की जाती है, वास्तव में भैरव की तांत्रोक्त साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

आगे तीन प्रयोग विशेष रूप से दिये जा रहे हैं, जिन्हें साधक अपनी बाधा के अनुसार अवश्य सम्पन्न करें। भैरव-अष्टमी को प्रारम्भ कर आगे प्रति रविवार को भी भैरव मन्त्र का एक माला मन्त्र जप अवश्य करना चाहिए। तो सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त होती है—

१-शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगाएं अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बना कर उस पर पानी छिड़कें फिर सिन्दूर छिड़के और उस पर **'काल भैरव गुटिका'** स्थापित करें ढेरी के चारों ओर तिल की ढेरियां बना कर उन पर **'पांच आक्रान्त चक्र'** रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गल का धूप तथा अगरबत्ती जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मन्त्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मन्त्र

विभूमि-भूमि-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवाय नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धि कुरु। ॐ काल-भैरव, वटुक-भैरव, भूत-भैरव! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धि-र्भवेत्।

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, वटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्

इस प्रकार ५१ बार इस मन्त्र का जप कर, धूप-दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मन्त्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

२-काल भैरव : रोग नाश प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है. इसमें यदि स्वयं की बीमारी के नाश हेतु करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें और यदि दूसरे के लिए प्रयोग करना है तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्तोत्रस्य सप्त ऋषि:, मातृका छन्द:, श्री बटुक: भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्धयर्थं जपे विनियोग:।

अपने सामने एक पात्र में 'काल भैरव महायन्त्र' स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, भैरव यन्त्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोरा रखें तथा मन्त्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मन्त्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें—

मन्त्र

ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भय विनाशनं देवता-सर्वसिद्धिर्भवेत्। शोकदु:ख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णत्वं महेशं। सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत्। काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी। महात्मन: योगिनां महा-देव-स्वरूपं। सर्वं सिद्धयेत्। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भैरव महा-भय-विनाशन देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यन्त्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा में बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

३-मुकदमा, वाद-विवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने 'काल भैरव महाशंख' स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से एक घेरा बना दें, सामने 'एक नागचक्र' स्थापित करें भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

ॐ ग्रां ह्लीं ह्लीं ह्लीं। (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु। सर्वार्थिकस्य सिद्धि रूपं त्व महाकाल! काल भक्षण महा-देव स्वरूप त्वं। सर्वं सिद्धयेत्! ॐ काल भैरव बटुक भैरव, भूत भैरव! महा भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्वं सिद्धिर्भवेत्।

५१ बार मन्त्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग, ब्रीफकेस में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत होकर सन्धि करने को उत्सुक हो जाता है, मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मन्त्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकता है कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है। काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि होकर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे वाले सात रविवार तक मन्त्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ●

क्या देवी देवता दर्शन देते हैं

जी हां !

साधना के प्रभाव से देवता साधक के सामने प्रगट होकर स्पष्ट फल देते हैं

प्रस्तुत लेख में कुछ ऐसे ही विशेष लघु प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं, जिसमें साधक को उसकी चेतन-अचेतन अवस्था में जिस देवता की वह साधना करता है, उसके द्वारा निर्देश अवश्य प्राप्त होते है—

साधना में सफलता और असफलता की कसौटी उसमें सिद्धि ही है। लेकिन क्या साधना सही रूप से हो रही है या नहीं और क्या मैं सही मार्ग पर आगे बढ़ रहा हूं, इसका उत्तर साधक को साधना के दौरान होने वाली अनुभूतियों के द्वारा ही मिलता है। यह अनुभूति किसी न किसी रूप में अवश्य ही अनुभव होती है, बस आवश्यकता है कि हम अपनी आन्तरिक शक्तियों को उतना जाग्रत कर दें कि इन अनुभूतियों को, इन दिशा निर्देशों को स्पष्ट रूप से ग्रहण कर सकें।

प्रश्न करना और उसका उत्तर पाने की इच्छा रखना मनुष्य का स्वभाव है। इसी जिज्ञासा वृद्धि के कारण आज मानव इतना उन्नति अवश्य कर चुका है, लेकिन कुछ प्रश्न जिनका सम्बन्ध केवल अनुभूति से है, उस बारे में अभी विज्ञान के पास ठोस उत्तर नहीं है। इसका एक मात्र कारण है कि हर बात को तर्क की कसौटी पर रख कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। भावना का विकास कर

मानसिक शुद्धता के साथ कार्य किया जाता है तो उसका स्पष्ट प्रभाव अवश्य ही देखने को मिलता है।

देवी देवताओं की संख्या तो अनन्त है और देवता कौन ? जिसने भी अपनी साधना के बल पर एक स्तर प्राप्त कर लिया और परम पिता परमात्मा की असीम शक्ति का एक अंश प्राप्त कर लिया वही तो देवता है। देवता साधना के मार्ग में एक विशेष माध्यम हैं, जिनकी कृपा से सांसारिक जीवन में कुछ विशेष प्राप्त किया जा सकता है और वह भी सहज रूप से। किन-किन देवताओं को प्रार्थना किन मन्त्रों से की जानी चाहिए और उसका मन्त्र विधान क्या है, इसे आगे देखते हैं—

१-स्वप्नेश्वरी साधना प्रयोग

स्वप्न में व्यक्ति को कुछ विशेष दिशा निर्देश अवश्य ही प्राप्त होते हैं और हर व्यक्ति इन निर्देशों को ग्रहण नहीं कर सकता। स्वप्न में अपने प्रश्नों के सही-सही उत्तर जानने के लिए स्वप्नेश्वरी साधना प्रमुख है। इस साधना में साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने **'स्वप्नेश्वरी यन्त्र चित्र'** का पंचोपचार पूजन करें। संध्या को समय इसका मन्त्र जप करने का उचित समय है। पूर्ण विधान के साथ १० हजार मन्त्र जप सम्पन्न करें।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य
विद्ये वद वद स्वाहा ॥

रात्रि को सोते समय १०८ बार पुनः मन्त्र जप कर जिस विशेष प्रकार का उत्तर जानना है वह लिख कर अपने सिरहाने रख दें और स्वप्नेश्वरी यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लें। रात्रि में साधक को अपने प्रश्न का उत्तर अवश्य ही प्राप्त होता है, और उस समय अचानक साधक की आंख खुल जाती है। उस उत्तर पर विचार कर साधक अपने सद्गुरुदेव को प्रणाम कर पुनः शयन करें, और जैसा स्वप्न में उत्तर मिला है उसी अनुसार कार्य करें उसके गुण अवगुणों पर विचार न करें।

२-यक्षिणी साधना

यक्षिणी सहज ही प्रसन्न होने वाली और प्रसन्न होकर पूर्ण कृपा करने वाली देवी है। इसमें साधक एक प्रिय भाव से साधना एवं मन्त्र जप करता है और साधना के दौरान तथा रात्रि में स्वप्न में साधक को विशेष जानकारी प्राप्त होती है।

पूर्व दिशा की ओर मुंह कर साधक **'यक्षिणी यन्त्र-चित्र'** का पूजन कर स्वयं सुगन्धित पुष्पों की माला पहिनें और यक्षिणी चित्र पर सुगन्धित पुष्प अर्पित करें—

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं वालीलं बाहुली
क्षां क्षीं क्षुं क्षौं क्षः स्वाहा ॥

तत्पश्चात् इस मन्त्र का जप करते हुए यन्त्र को गले में धारण कर रात्रि को साधक जमीन पर चटाई बिछा कर अकेला शयन करे, जब यक्षिणी साधक की साधना से प्रसन्न होती है तो वह स्वप्न अथवा जाग्रत अवस्था में प्रगट होकर साधक को धन प्राप्ति के विशेष मार्ग अवश्य ही स्पष्ट करती है।

३-हनुमान सिद्धि मन्त्र

हनुमान साधना के कई विधान है और जब साधक को किसी विजय, मुकदमा जैसा कार्य हो उसे हनुमान जी के उग्र रूप की साधना करनी चाहिए।

यह साधना सात दिन की है और किसी भी मंगलवार को प्रारम्भ की जा सकती है। उस दिन साधक पूजा स्थान में सायंकाल को स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर अपने सामने **हनुमान चित्र** तथा **रक्त चन्दन की**

मूर्ति एक तांबे के पात्र में स्थापित करें। भक्ति पूर्वक मूर्ति का पूजन कर एक दूसरे पात्र में 'हनुमान विजय यन्त्र (तावीज)' स्थापित करें तथा यन्त्र तथा मूर्ति के सिन्दूर लगावें, और एक अलग पात्र में गुड़ का नैवेद्य अर्पण करें, अन्य कोई नैवेद्य वर्जित है प्रतिदिन ११ सौ मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ।।

अपने पूजा स्थान में ही साधक को शयन करना है तथा हनुमान जी के आगे चढ़ाया हुआ प्रसाद आठों पहर अर्पित रहे, दूसरे दिन प्रसाद को एक डिब्बे में रख दें तथा नया गुड़ का प्रसाद अर्पित करें। इस प्रकार सात दिन तक पूजन तथा मन्त्र जप से श्री हनुमान जी प्रसन्न होकर साधक को रात्रि में प्रगट होकर अभय मुद्रा में वरदान देते हैं और जिस विशेष कार्य के लिए साधक अनुष्ठान करता है, उसमें सफलता मिलती है। इसमें आवश्यक है कि सात दिन की साधना के पश्चात् साधक गुड़ के प्रसाद को भूमि खोद कर डाल दें।

४-कर्ण पिशाचिनी सिद्धि मन्त्र

इस साधना द्वारा साधक अपने भविष्य की जानकारी के अलावा किसी अन्य के भूत, वर्तमान एवं भविष्य की जानकारी भी प्राप्त कर सकता है, कर्ण पिशाचिनी सिद्धि द्वारा साधक किसी भी व्यक्ति के चेहरे को देख कर ही उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर लेता है और यदि पूर्ण विश्वास के साथ नियमित अनुष्ठान किया जाय तो यह साधना कठिन नहीं है इसके दो विधान हैं—

प्रथम प्रयोग

कर्ण पिशाचिनी देवी त्रिशूल धारिणी देवी है और इस साधना में लोहे के त्रिशूल को एक मिट्टी का गोला बनाकर उसे अपने सामने रख उस पर त्रिशूल स्थापित करें और उस त्रिशूल पर **'कर्ण पिशाचिनी यन्त्र (तावीज)'** काले डोरे में बांधकर लगा दें और घी का दीपक जलाकर त्रिशूल एवं यन्त्र का पंचोपचार पूजन करें। निम्न मन्त्र का १०१ बार उच्चारण करें—

मन्त्र

ॐ नमः कर्ण पिशाचिनी अमोघ-सत्यवादिनी मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागत-वर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्य कथय कथय ह्रीं कर्ण-पिशाचिनी स्वाहा ।।

अब रात्रि को भी घी के दीपक के अलावा एक तेल का दीपक अवश्य जलाएं और उपरोक्त मन्त्र का पुनः १०१ बार उच्चारण कर सो जाएं। ग्यारह दिन के भीतर कर्ण पिशाचिनी देवी साधक को विशेष जानकारी अवश्य प्रदान करती है और साधक को उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए।

द्वितीय प्रयोग

इस विधि के अन्तर्गत **'कर्ण पिशाचिनी यन्त्र चित्र'** एक थाली में रख कर पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् एक तख्ती पर गुलाल बिछा कर उस पर अनार की कलम से निम्न मन्त्र लिखिये—

मन्त्र

ॐ नमः कर्ण पिशाचिनी मन्त्र करणी प्रवेशे अतीतानागत-वर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा ।।

मन्त्र लिख कर मिटा दें और पुनः लिखें, इस प्रकार ११ दिन निरन्तर यह प्रयोग करना है प्रतिदिन मन्त्र जप करें तख्ती को सिर के नीचे रख कर सो जाएं। इस प्रकार सिद्धि प्राप्त होने पर साधक जिस व्यक्ति के बारे में भी विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहता है उसे अपने सामने देखने पर इस मन्त्र का एक बार उच्चारण करते ही सब कुछ सामने स्पष्ट हो जाता है। साधना के पश्चात यन्त्र को अवश्य ही धारण किये रखें।

५-मणिभद्र मन्त्र अनुष्ठान

भूमि में गड़ा हुआ धन, लॉटरी, सट्टा इत्यादि के लिए मणिभद्र देव अनुष्ठान से श्रेष्ठ कोई अनुष्ठान नहीं है। यह साधना केवल रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है। रात्रि में अपने सामने एक थाली में एक तेल का दीपक स्थापित करें और इस दीपक में एक कौड़ी डाल दें। दूसरे पात्र में **'मणिभद्र चेटक यन्त्र'** स्थापित करें और लाल आसन पर बैठकर दीपक का तथा यन्त्र का पूजन कर निम्न मन्त्र का ग्यारह सौ बार जप करें—

मन्त्र

ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्व-कार्य सिद्धये मम स्वप्न दर्शनानि कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस प्रकार मन्त्र जप कर एक-एक लाल पुष्प लेकर थाली में रख कर निम्न मन्त्र बोलते हुए उस पर जल चढ़ाते रहें। इस प्रकार १०८ बार इसी मन्त्र से फूलों को अभिमन्त्रित कर इन फूलों को डिब्बी में बांध कर यन्त्र को बांह में धारण करें तथा डिब्बी को सिर के नीचे रख दें। स्वप्न में साधक को जो जानकारी वह प्राप्त करना चाहता है उसके बारे में ग्यारह दिन के भीतर-भीतर जानकारी प्राप्त होती है और यह अनुष्ठान भी ग्यारह दिन तक निरन्तर करना है।

६-रुद्र अनुष्ठान मन्त्र

प्रतिदिन रात्रि सोते समय अपने हाथ में **'दो मधुरूपेण रुद्राक्ष'** रख कर निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें। यह शिव प्रार्थना मन्त्र है—
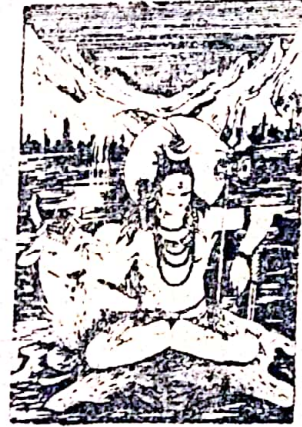
मन्त्र

ॐ भगवान् देव-देवेश शूल-भृद्-वृष-वाहन ।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्य मम सुप्तस्य शाश्वते ।।

ॐ नभोजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ।।

स्वप्न कथय मे तथ्यं सर्व-कार्येष्वशेषतः ।
क्रिया सिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।।

रात्रि को स्वप्न में उसे शुभ संदेश अवश्य प्राप्त होता है और जो स्वप्न प्राप्त हो उसका निवेदन गुरुदेव के सम्मुख कर उनके आदेशानुसार कार्य करें। शिव कृपा से रुके हुए कार्य सहज हो जाते हैं।

उपरोक्त सभी अनुष्ठान नियमित रूप से अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए। ●

एक अद्वितीय उपहार

सर्व मनोकामना सिद्धि लक्ष्मी चित्र (यन्त्र सहित)

(मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त)

पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य अपने पाठकों एवं साधकों का हित चिन्तन करना, उनकी उन्नति की आकांक्षा करना एव आध्यात्मिक क्षेत्र में मार्गदर्शन करना, जिससे उनकी उन्नति होती रहे।

यह योजना-उपहार भी इसी उद्देश्य के निमित्त है, जिसमें आपको सर्वथा निःशुल्क उपरोक्त चित्र (यन्त्र सहित) प्राप्त होगा, दीपावली की रात्रि को पूज्य गुरुदेव स्वयं सिंह लग्न में लक्ष्मी पूजन के समय इन चित्रों का पूजन कर प्राण प्रतिष्ठा करते हुए चैतन्य करेंगे, जिसे आपको भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं।

❀ आप इस प्रपत्र को पत्रिका से फाड़ कर अलग कर लें व नीचे दिये हुए स्थानों में आप अपने पांच परिचित मित्रों, स्वजनों या सम्बन्धियों के नाम व पूरे पते साफ-साफ हिन्दी या अंग्रेजी में भर कर लिफाफे में डाल कर उस पर साठ पैसे का टिकट लगाकर हमें भेजें।

❀ हम आपके दिये हुए पतों पर सन् १९९३ के विशेषांक व 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका के बारे में सूचना सामग्री निःशुल्क भेजेंगे, आप भी उन्हें इस आशय का पत्र लिख दें।

और प्रपत्र आते ही आपको उपरोक्त अद्वितीय उपहार कार्तिक पूर्णिमा अर्थात् १०-११-९२ से पहले पहले भेज देंगे, जिससे कि आप १०-११-९२ को उपरोक्त अद्वितीय चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर सकें।

ध्यान रहे कि दीपावली २५-१०-९२ से पहले पहले ही यह प्रपत्र हमें भेज दें।

१— नाम..

पूरा पता..

पोस्ट.............................. जिला..............................

प्रान्त.............................. पिन कोड......................

२— नाम..

पूरा पता..

पोस्ट.............................. जिला..............................

प्रान्त.............................. पिन कोड......................

३— नाम ....

पूरा पता ....

पोस्ट .... जिला ....

प्रान्त .... पिन कोड ....

४— नाम ....

पूरा पता ....

पोस्ट .... जिला ....

प्रान्त .... पिन कोड ....

५— नाम ....

पूरा पता ....

पोस्ट .... जिला ....

प्रान्त .... पिन कोड ....

मैं उपरोक्त प्रपत्र भर कर भेज रहा हूं, ये सभी पते सही और प्रामाणिक हैं मैंने भी इन सभी सम्बन्धियों को सूचना व पत्र भेज दिये हैं।

कृपया मुझे शीघ्र ही उपरोक्त योजना के अन्तर्गत "सर्व मनोकामना सिद्धि लक्ष्मी चित्र" प्रकाशित यन्त्र सहित सुरक्षित रूप से भिजवा दें।

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या..........................

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

नोट : पतों के लिए उपरोक्त प्रपत्र ही काम में लें, व निर्धारित स्थान में ही पूरा पता साफ-साफ लिखें तथा निम्न पते पर ही भेजें—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

पोस्ट—जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

अद्वितीय दुर्लभ और अनूठे उपहार

नव वर्ष के अवसर पर

★	भगवती लक्ष्मी साबर महायन्त्र	–६६०)रु०
★	साधना सिद्धि यन्त्र	–६००)रु०
★	मनोकामना सिद्धि साफल्य यन्त्र	–६००)रु०
★	निश्चित अप्सरा सिद्धि यन्त्र	–५८०)रु०
★	गुरु सिद्धि यन्त्र	–५६०)रु०

- आप इनमें से जो यन्त्र हैं, किसी एक के सामने सही का निशान लगा दें, हम आपको सुरक्षित रूप से सम्बन्धित यन्त्र सर्वथा मुफ्त में भेज देंगे ।
- इस योजना में वही भाग ले सकता है, जो पत्रिका सदस्य है ।
- उपरोक्त यन्त्रों में से कोई एक यन्त्र प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि आप इसी पत्रिका के साथ भेजे गये मनीआर्डर फार्म को भर कर भेज दें, जो कि सन् १९९३ का वार्षिक पत्रिका शुल्क है ।
- सूचना या पत्र पर उपहार नहीं दिया जायगा, केवल उन्हीं को उपहार दिया जायगा जो मनी-आर्डर फार्म भर कर भेजेंगे ।
- यदि आप पंचवर्षीय या आजीवन सदस्य हैं तो किसी मित्र या स्वजन को पत्रिका सदस्य बनाते हुए मनीआर्डर फार्म भर कर भेज दें, साथ में इस आशय की सूचना दे दें, जिससे सदस्य तो उन्हें बना दिया जायगा व उपहार आपको भेज दिया जायगा ।
- एक से अधिक उपहार प्राप्त करने के लिए पोस्ट ऑफिस से मनीआर्डर फार्म लेकर उसमें मित्रों-स्वजनों के नाम-पते लिख कर भेज दें, व उनकी रसीदें इसी प्रपत्र के साथ भिजवा दें, जिससे आपको उपहार भेजे जा सकें ।

- यह प्रपत्र ३१-१०-९२ तक भेजा जाना जरूरी है।
- इस प्रपत्र को फाड़ कर अलग कर लें, व भली प्रकार से भर लें, फिर इसके साथ जो मनीआर्डर आपने भेजा है उसकी रसीद चिपका दें या लगा दें, एक से अधिक मनीआर्डर किये हैं तो उन सब की रसीदें इसी प्रपत्र के साथ भेज दें।
- मनीआर्डर प्राप्त होते ही आपको सम्बन्धित उपहार सुरक्षित रूप से भिजवा दिया जायगा।

--------------------यहां से काटिये--------------------

मैं इस अनूठी योजना में भाग ले रहा हूं व सन् १९९३ के वार्षिक शुल्क के लिये मनीआर्डर भर कर भेज दिया है जिसकी रसीद साथ में संलग्न है।

मैंने (संख्या लिखें)....................मनीआर्डर और भेजे हैं जिनकी रसीदें साथ में संलग्न हैं, कृपया उन्हें पत्रिका सदस्य बना दें व रसीदें तथा उपहार मुझे निम्न पते पर भेज दें।

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या......................

मेरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

....

मनीआर्डर एवं यह प्रपत्र निम्न पते पर ही भेजें—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

पोस्ट—जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

विशेष साधनाएं

जिनसे लक्ष्मी सिद्धि सम्भव है

लक्ष्मी स्थायी निवास करती है

लक्ष्मी की साधना करना तो प्रत्येक साधक का कर्त्तव्य ही है, क्योंकि दरिद्रता जीवन का अभिशाप है और इस अभिशाप का निवारण लक्ष्मी साधना से ही सम्भव है।

अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों के लिए की जाती है, नीचे कुछ विशेष अद्भुत प्रयोग दिये जा रहे हैं—

लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं के कुछ विशेष नियम हैं, जो कि साधक को पूर्ण सिद्धि प्रदान कराते हैं, लक्ष्मी की साधना पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ करनी चाहिए, लक्ष्मी मन्त्र का जप किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है, लक्ष्मी साधना में साधक को शुद्ध एवं पवित्र वस्त्र पहिनने चाहिए, स्त्री को सुन्दर वस्त्र पूर्ण साज सज्जा के साथ पहिन कर लक्ष्मी पूजन करना चाहिए।

लक्ष्मी पूजन के समय वातावरण अत्यन्त सुगन्धित होना चाहिए, वस्त्रों पर इत्र, सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग करना चाहिए।

पूजन में सुगन्धित पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए, आसन के लिए पीला आसन उपयुक्त रहता है तथा सुन्दर वस्त्र धारण कर अथवा पीले वस्त्र धारण कर लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।

साधक के बाईं ओर तेल का तथा दाहिनी ओर शुद्ध

घी का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच सुगन्धित अगरबत्ती लगानी चाहिए।

साधक का मुंह पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिए, उनके सामने साधना से सम्बन्धित यन्त्र, चित्र, मूर्ति आदि स्थापित करनी चाहिए।

लक्ष्मी साधना, साधक अपनी धर्म पत्नी के साथ बैठ कर कर सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने दाहिनी ओर पत्नी को बिठाएं।

लक्ष्मी से सम्बन्धित निरन्तर साधना, करने वाले साधक के लिए यह पूर्ण अभीष्ट फलदायक रहता है, कि उसके पूजा स्थान में लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन महायन्त्र—**श्रीयन्त्र, कुबेर यन्त्र, कनकधारा यन्त्र** में कम से कम एक को अवश्य ही स्थापित होना चाहिए, यन्त्र पूर्णतया शुद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

लक्ष्मी साधना से पूर्व गणपति पूजन एवं गुरु पूजन शास्त्रों में आवश्यक माना गया है।

१-अष्टलक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग शनिवार या मंगलवार को छोड़ कर किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है, यदि नित्य ग्यारह मालाएं जप किया जाय तो निश्चय ही साधक को धन, धान्य, कुटुम्ब-सुख, व्यापार-वृद्धि, कीर्ति, सम्मान एवं भाग्योदय सम्भव होता है, इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में ताम्रपत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध **'अष्टलक्ष्मी यन्त्र'** स्थापित करना चाहिए। यन्त्र एवं चित्र का पूजन कुंकुम, केसर, अबीर-गुलाल, मौली, अक्षत, पंचामृत, गंगाजल, सुपारी, इत्र, दूध के प्रसाद से सम्पन्न करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद। ॐ श्रीं दिव्यानुभावे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं उज्वले प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं उज्वल रूपे प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं ज्योतिमयि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योतिरूपधरे प्रसीद प्रसीद। मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवनं कुरु कुरु। ॐ अमृत कुम्भे प्रसीद प्रसीद। ॐ अमृतकुम्भ रूपे प्रसीद प्रसीद। मम वांछितं देहि देहि। ॐ ऋद्धिदे प्रसीद प्रसीद। ॐ समृद्धिदे प्रसीद प्रसीद। ॐ महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं लोकमातः प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं लोकजननि प्रसीद प्रसीद।
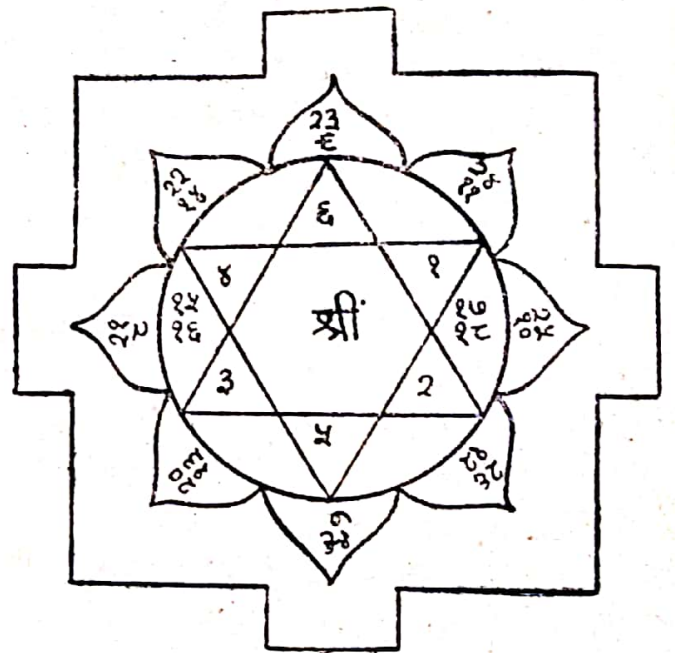
ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं अमृत संजीवनी प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं शान्त लहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ॐ श्रीं शान्तप्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ग्लौं श्रीं नमः। ॐ ह्रीं सर्वशत्रु दमनि सर्वशत्रु निवारय निवारय, विघ्नं छिन्धि छिन्धि प्रसीद। धरणेन्द्रपद्मावति मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद।

इस मन्त्र का जप **कमलगट्टा माला** से ही सम्पन्न करना चाहिए।

२-बाधा निवारण : शिव-लक्ष्मी प्रयोग

जिस साधक अथवा साधिका को अपने कार्यों की पूर्णता में बार-बार बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो, उन्नति के उचित साधन प्राप्त नहीं होते हों, शत्रुओं का भय अधिक रहता हो, उसे यह शिव प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किये जाने वाले इस साधना प्रयोग हेतु मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त **'स्फटिक शिवलिंग'** अथवा **'नर्मदेश्वर शिवलिंग'** अत्यन्त उत्तम रहता है, मन्त्र जप **'शंख माला'** से सम्पन्न करना चाहिए, साधना के समय सर्वप्रथम गुरु पूजन एवं गणपति पूजन करने के पश्चात् शंख माला से **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र की एक माला का जप करें साथ ही साथ निरन्तर दूध मिश्रित जल शिवलिंग पर अर्पित करते रहें, इसके पश्चात् नीचे लिखे शिव लक्ष्मी मन्त्र जप के साथ ही साथ बिल्व पत्र शिवलिंग पर अर्पित कर एक माला मन्त्र जप करें।

यह साधना प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करने से साधक को सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है, और उसकी विपत्तियां दूर होती हैं, शत्रुओं का तेज क्षीण होता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठ ठं नमो भगवते मम सर्वकार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा ॥

३-स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग लक्ष्मी प्राप्ति का तंत्र प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक को मृग चर्म का आसन बिछा कर मन्त्र जप करना चाहिए, इस साधना में साधक अपने सामने पूजा स्थान में लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर चौकोर रूप में **'२१ लक्ष्मी प्राकाम्य'** स्थापित करें और बीच में **'गणपति लक्ष्मी यन्त्र चित्र'** तथा **'गुरु यन्त्र-चित्र'** स्थापित करें, मौन रूप से प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप कर, एक लक्ष्मी प्राकाम्य किसी सरोवर, जलाशय अथवा कुएं में अर्पित कर दें।

२१ दिन की इस विशिष्ट साधना काल में ही साधक को विशेष अनुभव होते हैं, रुके हुए कार्य पूरे होने प्रारम्भ हो जाते हैं, इस साधना में **'स्फटिक माला'** का प्रयोग करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्थिरां स्थिरां ॐ ॥

४-ऋणमोचन लक्ष्मी प्रयोग

इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में **'लक्ष्मी यन्त्र-चित्र'** स्थापित करने के पश्चात् बहुत

ऋण मोचन यन्त्र
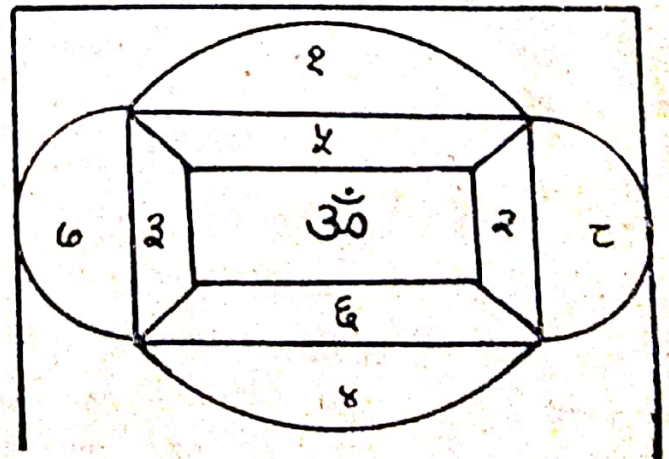
सारा चन्दन घिस कर थाली में लगा कर उस थाली में मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त **'तीन मोतीशंख'** एक साथ स्थापित करने चाहिए, इन तीनों मोतीशंख

पर "श्रीं" बीज मन्त्र का जप करते हुए सिन्दूर अर्पित करें, बीजमन्त्र की एक माला जप के पश्चात सुगन्धित अगरबत्तियां जलाएं और ऋणमोचन लक्ष्मी मन्त्र का जप कमलगट्टा माला से सम्पन्न करें, इस साधना में तेल का दीपक होना चाहिए। प्रति-दिन एक माला मन्त्र जप सम्पन्न करने से साधक के ऋणों का नाश होता है तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।

सात दिन की इस साधना में सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त न हो तो ४४ दिन तक यह मन्त्र जप करें, साधना की पूर्णता के पश्चात् तीनो मोती शंख अपने पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र में बांध कर रख दें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं श्रियै नम मम लक्ष्मीं मामृणो-त्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय नमः ।।

५-कुबेर लक्ष्मी प्रयोग

यह सरल प्रयोग एक दिन का है, और बाद में नित्य प्रति एक माला इस विशेष मन्त्र का जप करना आवश्यक है, इस प्रयोग में पूजा स्थान में **'लक्ष्मी चित्र'** के साथ साथ **'कुबेर यन्त्र'** स्थापित करना आवश्यक है, इस प्रयोग में अपने सामने घी का दीपक और अगरबत्ती अवश्य जलाएं।

मन्त्र

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ।।

यह साधना प्रयोग बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए, पूजन कक्ष में कुबेर यन्त्र, अबीर-गुलाल, अक्षत, फल इत्यादि समर्पित करने के पश्चात् मन्त्र जप के साथ-साथ दूब, कमलबीज अवश्य अर्पित करने चाहिए, यह प्रयोग सम्पूर्ण दरिद्रता नाशक प्रयोग है, इस मन्त्र का **'स्फटिक माला'** से निरन्तर जप करने से दरिद्रता दूर होती है, और लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होती है।

६-नित्य लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को नियमित रूप से सम्पन्न करना चाहिए इस साधना में अपने पूजा स्थान में **'कनकधारा यन्त्र'** स्थापित कर प्रतिदिन
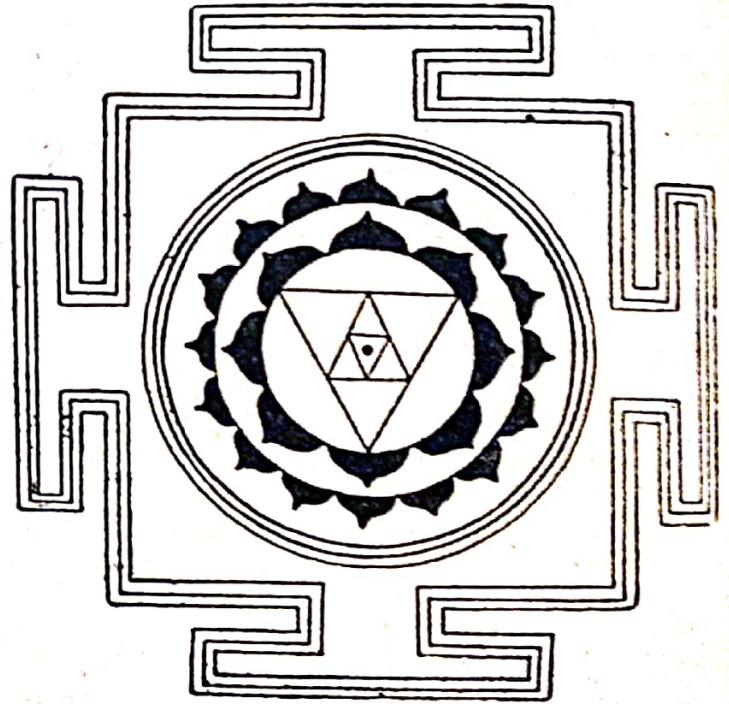
पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए, तत्पश्चात नित्य प्रति का पूजन सम्पन्न किया जाता है, फिर गणपति एवं गुरु पूजन के पश्चात् एक माला निम्न मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे धनं चिन्ता दूरं करोति स्वाहा ।।

इस मन्त्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है, इस मन्त्र के निरन्तर जप से नित्य प्रति की चिन्ताएं कम होती हैं तथा खर्च के अनुपात में आमदनी में वृद्धि होती है मन में हर समय प्रसन्नता बनी रहती है। ●

शत्रु बाधा निवारण का तीव्र प्रयोग

माहेश्वरी तन्त्र से

'माहेश्वरी तन्त्र' भगवान् शिव द्वारा रचित तांत्रोक्त कार्यों सम्बन्धी प्रयोग काव्य है, जिस पर अलग-अलग ऋषियों ने आधार बना कर ग्रन्थों की रचना की है। माहेश्वरी तन्त्र मूल रूप से उच्चाटन, विद्वेषण, आकर्षण, मारण एवं वशीकरण, मोहन, स्तम्भन विद्याओं से सम्बन्धित है, और जो साधक इनमें दिये गये प्रयोगों को पूर्ण विधि-विधान सहित मूल रूप से सम्पन्न करता है, उसे शत प्रतिशत सफलता मिलती ही है।

जहां तक शत्रु बाधा निवारण का प्रश्न है यह मूल रूप से मारण विद्या के अन्तर्गत आता है। मारण का तात्पर्य मृत कर देने से नहीं है इसका तात्पर्य है कि जिस पर प्रयोग किया जाय वह अपने जीवत में मूल जीवन तत्वों से लक्ष्मी, बुद्धि, वृद्धि (सम्मान) से वंचित हो जाय क्योंकि जिस व्यक्ति के पास ये तीन वस्तुएं नहीं होती हैं वह जीवित होते हुए भी मृत प्रायः ही है। मारण तंत्र के सम्बन्ध में भगवान शिव का कथन है कि यह प्रयोग निरर्थक कार्यों के लिए नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा साधक दोषी होता है और किसी मूर्ख द्वारा केवल आजमाने के उद्देश्य से अथवा हंसी-ठट्ठे में किये गये प्रयोग मे ये तन्त्र उसी के ऊपर गिर पड़ता है। मूल रूप से यह रक्षाकारक तन्त्र है।

जब तीव्र आर्थिक हानि की संभावना हो शत्रु द्वारा जबरदस्ती धन का हरण कर लिया गया हो, झूठे मुकदमे में शत्रुओं द्वारा फंसा दिया जाय अथवा शत्रुओं द्वारा इज्जत, सम्मान को हानि पहुंचाने का प्रयास किया जाय उस स्थिति में 'माहेश्वरी तन्त्र' का प्रयोग करना चाहिए। और एक बार में एक ही बाधा निवारण हेतु तन्त्र विधान

करना उचित रहता है और यही शास्त्र सम्मत भी है ।

शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

इस महातन्त्र से सम्बन्धित सभी प्रयोग रात्रि में ही सम्पन्न किये जाते हैं और वह भी संध्याकाल के पश्चात् जब एक बार अनुष्ठान हाथ में लें चाहे वह तीन दिन का हो अथवा सात दिन का, उसे पूरा अवश्य करें तथा निश्चित संख्या में मन्त्र जप करें, इस शत्रु बाधा निवारण प्रयोग में अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए महापर्वत, महा-अग्नि, महावायु, महाभूमि और महा आकाश सभी देवताओं को साक्षी रखते हुए उन्हें तीव्रतम रूप में जाग्रत कर प्रयोग सम्पन्न किया जाता हैं। ये छः देवता शक्ति के भण्डार कहे गये हैं ।

साधना सामग्री

इस तीव्र प्रयोग हेतु कुछ विशेष सामग्री की आवश्यकता अवश्य रहती है ये सामग्रियां हैं—**१-माहेश्वरी यंत्र २-छः षट् देवता चक्र, ३-नौ पीठ शक्तिबीज** के अलावा पुष्प, कुंकुम, अक्षत आवश्यक है ।

साधना विधान

सोमवार की रात्रि को यह विशेष साधना सम्पन्न की जा सकती है तथा पूर्ण प्रयोग सात दिन का है और ८वें दिन साधक को हवन अवश्य करना चाहिए। इस विधान में सर्वप्रथम विनियोग तत्पश्चात् न्यास सम्पन्न कर शक्ति पूजा सम्पन्न करना चाहिए । अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर एक ताम्रपात्र के मध्य में यन्त्र को स्थापित करें । यन्त्र को पहले घी से फिर दूध से तत्पश्चात् जल से स्नान करा कर स्वच्छ वस्त्र से साफ कर "ॐ ह्रीं सर्व शक्ति पद्मासनाय" मन्त्र का उच्चारण करते हुए ताम्रपात्र में एक पुष्प रख कर स्थापित करें ।

साधना क्रम में जिस प्रकार सामग्री की आवश्यकता हो उसी प्रकार स्थापना करते रहें अतः साधक धूप, दीप जला दें सभी सामग्री अपने पास रख लें और कार्य प्रारम्भ करें । पहले विनियोग तत्पश्चात् न्यास फिर षट् देवता पूजन, तत्पश्चात् पीठ शक्ति पूजन फिर यन्त्र स्थापना पूजन तत्पश्चात् मूल मन्त्र का जप निश्चित संख्या में करना है—

विनियोग

ॐ अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः महापर्वत महाब्धि महाग्नि महावायु महाधरा महाकाशाः षट् देवताः हुं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि
अभीष्ट छन्दसे नमः मुखे
महापर्वत महाब्धि महाग्नि महावायु महाधरा महाकाशाष्ट देवताभ्यो नमः हृदि
हुं बीजाय नमः गुह्ये
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः
विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रीं शिखायै वषट्

ॐ ह्रीं कवचाय हुं

ॐ ह्रीं अस्त्राय फट्

अब सर्वप्रथम छः तिल की ढेरी बना कर उस पर **'षट् देवता चक्र'** स्थापित करें। प्रथम में पर्वत का ध्यान, द्वितीय में समुद्र का ध्यान, तृतीय में अग्नि का, चतुर्थ में वायु का, पंचम में भूमि का तथा षष्टम चक्र में आकाश देवता का ध्यान कर स्थापना करें तथा प्रत्येक का पूजन सम्पन्न कर दीप दर्शन लें। तत्पश्चात् **'नौ पीठ शक्तियों'** का पूजन करें। इन देवताओं के आगे छः चावल की ढेरियां बना कर एक-एक चक्र निम्न क्रम में रखते हुए आठ दिशाओं में आठ शक्तियों तथा मध्य में मंगला शक्ति की स्थापना करें, इनका स्थापना क्रम इस प्रकार से होगा–

ॐ जयायै नमः	ॐ विजयायै नमः
ॐ अजितयै नमः	ॐ अपराजितायै नमः
ॐ नित्यायै नमः	ॐ बिलासिन्यै नमः
ॐ दग्ध्यै नमः	ॐ अघोरायै नमः

मध्ये ॐ मंगलायै नमः ।।

अब ताम्रपात्र में यन्त्र की स्थापना करनी है, इस स्थापना क्रम में सर्वप्रथम यन्त्र को घी से शुद्ध करें तत्पश्चात् दूध से और फिर जलधारा से अभ्यंग कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ ह्रीं सर्वशक्ति पद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्प का आसन देकर बाजोट के मध्य में स्थापित करें तथा देव आज्ञा से आवरण पूजा प्रारम्भ करें, पुष्पांजलि देते हुए, निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें—

संविन्मयपरो देव परामृतरसप्रिय ।

अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ।।

तत्पश्चात् यन्त्र पर छः सिन्दूर की बिन्दियां लगावें और स्वयं के भी तिलक करें फिर यन्त्र में स्थापित इन्द्रादि दस दिक्पाल—इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त तथा अस्त्र—वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अंकुश, गदा, त्रिशूल, पद्म, तथा चक्र आदि का पूजन कर मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करना चाहिए।

शत्रु बाधा निवारण महामन्त्र

।। ॐ अं कं चं टं तं पं हुं लों

ह्रीं हुं सः हुं फट् स्वाहा ।।

ध्यान रखें कि इस पूर्ण साधना में १६ हजार मन्त्रों का जप करना है और यह मन्त्र जप **"तांत्रोक्त काली हकीक माला"** से ही सम्पन्न करना चाहिए। जब मन्त्र जप पूर्ण हो जाये तो निम्न छः द्रव्य–धान्य, चावल, घी, सरसों, जौ, तथा तिल प्रत्येक की २६७ आहुतियां बारी-बारी से देनी है, इससे कुल १६०२ आहुति अर्थात् १६ हजार मूल मन्त्र का दशांश हवन हो जाता है।

तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन इत्यादि सम्पन्न कराकर साधना को पूर्ण करना चाहिए, यन्त्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें और सम्भव हो तो नित्य प्रति शत्रु बाधा निवारण मन्त्र के कुछ मन्त्र अवश्य ही जप करें, अन्य सामग्री एक लाल कपड़े में बांध देनी चाहिए, यह साधना प्रयोग अत्यन्त तीव्र प्रयोग है, और साधक जिस प्रकार की इच्छा से साधना सम्पन्न करता है उसमें उसे सफलता अवश्य ही मिलती है। भगवान् शिव की कृपा से उसके कार्य सफल होते हैं और षट् देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। ●

शक्ति बीज मन्त्र

" क्लीं "

पर सिद्ध प्रयोग

सभी बीज मन्त्रों में 'क्लीं' बीज मन्त्र को सर्वाधिक शक्तिप्रद एवं तीव्र बताया गया है इस बीज मन्त्र का निरन्तर सही जप करना ही साधना सिद्धि का सबसे बड़ा कार्य है। आगे की पंक्तियों में इससे सम्बन्धित एक विशेष प्रयोग स्पष्ट किया जा रहा है—

एक फीट व्यास के गोल सफेद कागज पर गहरी कलम से काली स्याही से मध्य में "क्लीं" बीजाक्षर कम से कम चार अंगुल का अवश्य होना चाहिए। इस कागज को किसी गत्ते पर चिपका सकते हैं। कागज के खाली भाग पर कोई भी रंग भर सकते हैं। नियमानुसार लक्ष्मी साधना हेतु पीला रंग आकर्षण साधना हेतु लाल रंग तथा रोग नाश हेतु हरा रग भर दें। इस प्रकार कागज का कोई भी हिस्सा खाली नहीं रहेगा।

इसे अपने कमरे में दीवार पर टांग दें इसकी ऊंचाई इस प्रकार से रखें कि आप जमीन पर बैठें तो 'क्लीं' बीजाक्षर आपको नेत्रों के एकदम सीधे सामने हो।

सर्वप्रथम सभी प्रकार के बाह्य विचार एवं मानसिक तनाव शान्त करने हेतु एक माला 'ऐं क्लीं नमः' मन्त्र का जप अवश्य करें। इस विशेष प्रयोग में साधक बिलकुल शान्त भाव से पालथी मार कर दो फीट दूर बैठें, फिर १५ मिनट तक इस बीजाक्षर पर अपनी दृष्टि स्थिर करने का प्रयास करें, धीरे-धीरे यह प्रयास एक घण्टे तक बढ़ाया जा सकता है। इस बीज मन्त्र को ध्यान से देख कर नेत्र बन्द करने पर भी यह अपने कपाल पर देखिये। प्रारम्भ में न दिखे तो घबराइये नहीं, धीरे-धीरे अभ्यास करें।

धीरे-धीरे अभ्यास करने के पश्चात् जब सामने कागज पर अंकित बीज मन्त्र नेत्र बन्द करने पर भी दिखाई देने लगे तो यह निश्चित है कि आपका प्रयोग सिद्ध हुआ है, इसे निरन्तर करते रहें और "ऐं क्लीं नमः" मन्त्र का जप भी निरन्तर करते रहें, इस साधना से ऊपर दिये गये रंगों के अनुसार ही शक्ति प्राप्त होती है। यह एक अनुभूत सिद्ध प्रयोग है। ●

अद्भुत एवं आश्चर्यजनक प्रभाव युक्त

सिद्ध बीसा यन्त्र

मन्त्र-तन्त्र तथा यन्त्र की सभी साधनाओं के आदिदेव भगवान् शिव ही माने गये हैं और शिव द्वारा प्रदत्त यह ज्ञान मूल रूप से ग्रन्थों में शिव पार्वती संवाद के रूप में है। इस विशेष क्रम में प्रस्तुत है एक महत्वपूर्ण यन्त्र विवेचन।

एक बार देवी पार्वती ने भगवान शिव को कहा कि प्रभु! आपने मुझे साधनात्मक तत्व की सारी बातें बता दी हैं परन्तु एक बात छिपा रखी है, वह भी बता दें। इस पर भगवान् शिव बोले कि मैंने तुम्हें जो मन्त्र यन्त्र तथा स्तोत्र पूजा विधान बताये हैं वह तो ब्रह्मा इत्यादि देवों ने भी नहीं सुने हैं. ऐसी कौन सी गोपनीय विद्या है जो मैंने प्रगट नहीं की है, इस पर देवी पार्वती ने कहा कि मेरु-पृष्ठीय बीसा यन्त्र के बारे में आपने मुझे अब तक इसकी बिधि और माहात्म्य नहीं बताया है और आपका ही कथन है कि यह तो सर्वश्रेष्ठ यन्त्र है यह वरुण देव का साक्षात् स्वरूप है।

इस पर भगवान् शिव ने कहा कि यह यन्त्र तो त्रैलोक्य को मोहित करने वाला, महासौभाग्यदायक, सब अर्थों को देने वाला, शत्रु के हृदय का शोषण करने वाला, सब प्रकार मे रक्षा करने वाला, भाग्य खोलने वाला ऐश्वर्य देने वाला, गन्धर्व सर्प और राक्षसों को काबू में लाने वाला राजाओं का मारण, मोहन और विद्वेषण करने वाला, मस्ती की वाणी और कवित्व शक्ति देने वाला, गड़े हुए धन को आकर्षित करने वाला, काल पाश (मृत्यु) से छुड़ाने वाला और युक्ति देने वाला है, त्रैलोक्य में यह दुर्लभ है। यह यन्त्र त्रैलोक्य को वश में कर देता है, क्षुद्र मानवों की तो कथा ही क्या है? जिस साधक के पास यह वरुण देव का यन्त्र होता है, उसके निःसन्देह सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

यह यन्त्र सामान्य यन्त्रों से अलग तथा इस प्रकार से बनाया जाता है कि इसका स्वरूप मेरुपृष्ठीय तथा कुल नौ कोठे होते हैं। सामने दिये गये चित्र के अनुसार ही बना हुआ बीसा यन्त्र पूर्ण प्रभावशाली तथा शिवोक्त बीसा यन्त्र कहलाता है। केवल यन्त्र बना कर धारण कर लेने से ही फल की प्राप्ति नहीं हो जाती, पूर्ण विधि-विधान सहित शास्त्रोक्त पद्धति से इसका निर्माण कर इसका पूजन कर इसको धारण करने से ही यह यन्त्र सिद्ध होता है और अपना पूर्ण फल देता है।

यन्त्र निर्माण विधान

इस यन्त्र को केवल तीन मुहूर्तों में ही निर्णय कर प्राणप्रतिष्ठा की जा सकती है, ये तीन मुहूर्त है, गुरु पुष्य, रवि पुष्य सिद्ध योग, दीपावली तथा ग्रहण काल। आने वाले समय में दो विशेष मुहूर्त दीपावली (२५-१०-९२) तथा चन्द्र ग्रहण–दिनांक ६-१२-६२ (बुधवार) को आ रहे हैं, इन दोनों विशिष्ट मुहूर्तों में गुरु शक्तिपीठ जोधपुर में पुज्य गुरुदेव के निर्देशन में कुछ विशेष बीसा यन्त्रों का निर्माण कर उनकी प्राणप्रतिष्ठा सम्पन्न की जायेगी। इस यन्त्र निर्माण शुभ मुहूर्त के साथ-साथ षोडशोपचार पूजन तथा लक्ष्मी बीज मन्त्रों से आपूरित कर शिव सहस्त्र सिद्धि मन्त्र से सम्पुटित किया जाना है और एक बार जब यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा कर दी जाती है तो साधक को केवल इसका पूजन कर इसे धारण करना ही रहना है। साधक को इसका पूजन एक विशेष तरीके से ही सम्पन्न करना चाहिए।

यन्त्र पूजन विधान

शुद्ध बीसा यन्त्र प्राप्त कर साधक उसे अपने पूजा स्थान में रखें और उस दिन सायं स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अष्टगन्ध से कागज या भोज-पत्र २१ बार इस यन्त्र को लिखें फिर त्रिलोह यन्त्र और कागज पर लिखे यन्त्रों का केसर व पुष्पों से पूजन कर धूप-दीप दें, अब निम्न मन्त्र का एक हजार बार उच्चारण करें।

मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ।।

इसमें सर्वप्रथम ॐकार है, बीच में लक्ष्मी बीज मन्त्र 'श्रीं' है भुवनेश्वरी बीज मन्त्र 'ह्रीं', काम बीज 'क्लीं' है, अब इन कागज पर लिखित यन्त्रों को आटे की रोटी में

सिद्ध बीसा यंत्र
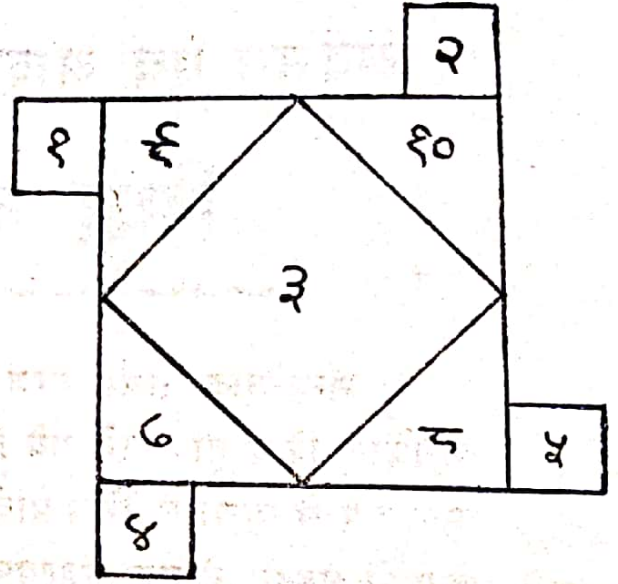
रख कर ऊपर 'त्रिलोह धातु' निर्मित यन्त्र को रखें तथा किसी नदी, जलाशय पर जाकर रोटी सहित कागज पर लिखित यन्त्रों को प्रवाहित कर दें तथा धातु निर्मित यन्त्र को घर ले आएं।

इस प्रकार यह क्रिया सात दिन तक सम्पन्न करें तथा सातवें दिन पूजन करते समय जलाशय के किनारे वरुण देव का ध्यान करें और घर आकर इस यन्त्र को गले में धारण कर लें।

साधक को चाहिए कि नियमित रूप से ऊपर लिखे मन्त्र का जप अवश्य करते रहें।

बीसा यन्त्र के प्रभाव से बड़े-बड़े संकट सरलता से कट जाते हैं और इसे तो 'त्रैलोक्य विजय यन्त्र' कहा गया है, इसमें कोई संदेह नहीं। वास्तव में तो यह महा यन्त्र परिवार के सभी सदस्यों को अवश्य ही धारण करना चाहिए। ●

गीता तो शुद्ध तांत्रोक्त ग्रन्थ है

गीता मन्त्र अनुष्ठान

गीता को केवल भगवान् कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेश का ग्रन्थ मानना बिल्कुल ही गलत है, वास्तव में गीता एक महान् तांत्रोक्त ग्रन्थ है। शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, स्वामी निम्बकाचार्य इत्यादि महान् विद्वानों ने इस पर टीका-टिप्पणी व्याख्या एवं अपनी अनुभूति पर रचनाएं की हैं। नीचे कुछ विशेष अनुष्ठान दिये जा रहे हैं जिन्हें साधक अवश्य ही सम्पन्न करें।

जिस घर में नित्य प्रति गीता पाठ होता हो उस घर में दारिद्रय नहीं रहता, भगवान् कृष्ण की कृपा से पारिवारिक सुख सम्पत्ति में वृद्धि तथा पुत्र, पौत्र लाभ होता है।

गीता अनुष्ठान में सर्वप्रथम साधक को ताम्रपत्र पर अंकित "गीता यन्त्र" अवश्य ही स्थापित कर देना चाहिए। ये गीता यन्त्र मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त तथा नीचे दिये गये चित्र के अनुसार होना चाहिए और इसकी पूजा चन्दन से करनी चाहिए। गीता साधना किसी भी दिन प्रारम्भ की जा सकती है, प्रातः ब्रह्म मुहूर्त सबसे उपयुक्त है, इसे अपने पूजा स्थान में स्थापित कर पंचोपचार पूजा सम्पन्न करनी चाहिए तथा चन्दन, तुलसी, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आचमन एवं ताम्बूल (सुपारी) का अर्पण करना चाहिए। प्रथम दिन साधक भक्तिपूर्वक गीता का पाठ अवश्य करें, जब एक बार प्रारम्भ करेंगे तो बार-बार पाठ करने की इच्छा उत्पन्न होगी, जो साधक संस्कृत पाठ नहीं कर सकते, वे इसके हिन्दी अनुवाद का पाठ भी सम्पन्न कर सकते हैं।

गीता यन्त्र स्थापित कर एक माला "ॐ नमः भगवते वासुदेवाय" मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए। जब गीता पाठ पूर्ण हो जाय तो साधक को मन्त्र प्रयोग करना चाहिए, मन्त्र प्रयोग में यह निश्चित है कि कम से कम तीन हजार मन्त्र जप से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसके पश्चात् इसका प्रयोग किया जाना चाहिए।

१-भूत-प्रेत रोग बाधा निवारण

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।

(गीता ११/३६)

इस श्लोक द्वारा जल को अभिमन्त्रित कर भूत-प्रेत ग्रसित व्यक्ति को पिला देने से भूत-प्रेत का निवारण होता है, रोगी को पिलाने से रोग नाश होता है। इस हेतु १०८ बार गीता यन्त्र के आगे मन्त्र जप करना आवश्यक है तांबे का एक लोटा जल से भर कर रखें और एक माला मन्त्र जप करें और रोगी को जल पिला दें, निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

२-दरिद्रता निवारण प्रयोग

गीता यन्त्र का पूजन कर इस मन्त्र का १०८ बार प्रतिदिन जप करने से कैसी भी दरिद्रता हो कितने ही श्राप से ग्रसित व्यक्ति हो उसकी दरिद्रता दूर होती ही है।

मन्त्र

वायुर्यमोग्निर्वरुणः शशांक प्रजापतिस्त्वं प्रपिता महश्च ।
नमो नमस्तेस्तु सहस्त्रकृत्वा पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।

(गीता ११/३९)

३-प्रेत बाधा निवारण

यदि किसी बालक को नजर लग गई हो अथवा किसी ने कोई जादू, टोना-टोटका कर दिया हो अथवा कोई व्यक्ति प्रेत बाधा से ग्रसित हो तो निम्न मन्त्र का १०८ बार नीम की डाली अपने हाथ में लेकर उस बालक को स्पर्श कराते हुए १०८ बार जप करना चाहिए। इस प्रकार झाड़ने से वह बाधा दूर हो जाती है।

मन्त्र

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण, स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विवश्मनन्तरूप ।।

(गीता ११/३८)

४-लक्ष्मी वृद्धि, कार्य सिद्धि प्रयोग

गीता यन्त्र के आगे एक माला 'ॐ नमः भगवते वासुदेवाय' तथा एक माला निम्न मन्त्र का जप करने से रुके हुए कार्य सिद्ध होते हैं तथा लक्ष्मी वृद्धि होती है, खर्च के अनुपात में आमदनी बढ़ती है।

मन्त्र

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु सर्व एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्व समान्योषि ततोसि सर्वः ।।

(गीता ११/४०)

५-सरकारी उच्चाधिकारियों की कृपा प्राप्त करना

निम्न मन्त्र के अनुष्ठान से अधिकारी अथवा कोई भी व्यक्ति जो कि आपसे अप्रसन्न है आपके कार्य पूरे नहीं करता है वह प्रसन्न होता है तथा आपको अपने कार्यों में सहयोग देता है।

गीता यँत्र
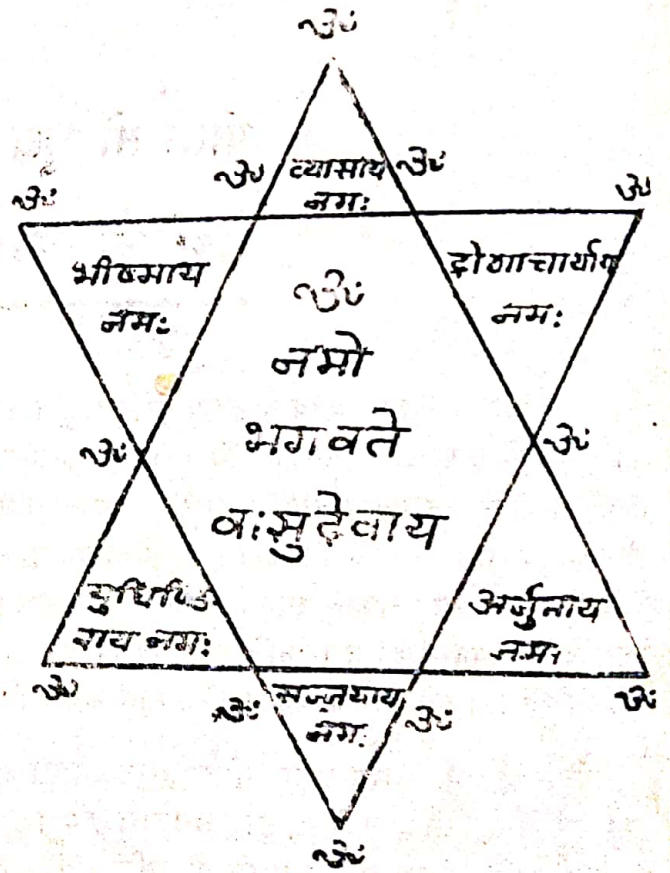
मन्त्र

यच्चावहासार्थमसत्कृतोसि विहारशय्यासन भोजनेषु ।
एकोधवाप्यायुत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।।

(गीता ११/४२)

निम्न पांच प्रयोगों के अलावा गीता मन्त्र के अन्य बहुत से प्रयोग हैं, जिन्हें साधक नित्य प्रति सहज भाव से अवश्य कर सकते हैं, लेकिन यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पहले तीन हजार मन्त्र जप कर मन्त्र को सिद्ध अवश्य किया जाय तभी भगवान कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है, साधकों को चाहिए कि वे अपने घर में गीता की पुस्तक अवश्य रखें गीता का नित्य प्रति पाठ करें और अपने बालकों को भी यह अभ्यास डालें कि वे गीता अध्ययन की ओर रुचि लें, गीता तो वास्तव में कर्म प्रधान जीवन के सभी भागों के मूल विवेचन का महाग्रन्थ है। ●

अक्षय घट की अपूर्व साधना
जिसे केवल
चन्द्र ग्रहण के दिन ही सम्पन्न किया जाता है

ग्रहण सामान्य भाषा मे चाहे अशुभ माना जाता हो परन्तु साधकों के लिए यह वरदान स्वरूप होता है, क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टि से इस क्षण सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी एक ही सीध में आ जाते हैं, शास्त्रीय दृष्टि से ग्रहण के समय किया हुआ कार्य और साधना क्रम अपने आप में पूर्ण एवं सफल होता है।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

९-१२-९२ को खग्रास चन्द्र ग्रहण है, इस ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि को १० बज कर ३२ मिनट से होगा तथा समाप्ति काल आधी रात के बाद १ बज कर ५८ मिनट पर सम्पन्न होगा, इस प्रकार इस पूरी अवधि में धीरे-धीरे चन्द्र ग्रस्त होता हुआ ठीक १२ बज कर १८ मिनट पर पूर्ण खग्रास हो जायेगा और फिर धीरे-धीरे शुद्ध होता हुआ १.५८ बजे पूर्णतः निर्मल हो जायेगा, सनातन धर्मियों की दृष्टि से इसका सूतक दिन के २ बजे लग जायेगा अतः २ बजे के बाद खानपान आदि वर्जित हैं।

भारतवर्ष में इस चन्द्र ग्रहण के दर्शन नहीं होंगे लेकिन इससे चन्द्र ग्रहण की साधना पर कोइ अन्तर नहीं पड़ता।

अक्षय घट

साधना की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण संयोग है कि इस बार ग्रहण वृष राशि पर गतिशील है, जब भी खग्रास ग्रहण वृष राशि पर गतिशील हो तो जीवन की दुर्लभ एवं गोपनीय अक्षय घट साधना सम्पन्न की जा सकती है।

अक्षय घट से तात्पर्य ऐसी साधना जिसे सम्पन्न करने पर जीवन में धन-धान्य आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहे और व्यापार में वृद्धि, प्रमोशन लाभ एवं आकस्मिक धन लाभ की दृष्टि से कार्य सम्पन्न हो, कई-कई साधक वर्षों से ऐसे अवसर का इन्तजार करते रहते हैं, जिससे कि इस शुभ अवसर पर साधना सम्पन्न की जा सके।

साधना सामग्री

इस साधना में निम्न पांच वस्तुओं की अवश्यकता होती है, जिसे पहले से ही प्राप्त कर रख लेनी चाहिए—१-तांबे का कलश, जिसमें लगभग आधा किलो पानी हो, २-अगरबत्ती, ३-दूध का बना प्रसाद, ४-रोकड़ रुपया, ५-हिरण्य गर्भ।

हिरण्य गर्भ लक्ष्मी का ही स्वरूप माना गया है, हिरण्य लक्ष्मी को भी कहते हैं, यह एक विशिष्ट पदार्थ होता है, जो कि दुर्लभ एवं कठिनता से प्राप्त होता है, इस विशिष्ट साधना में हिरण्य गर्भ का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी के माध्यम से अक्षय घट सम्पन्न होता है।

साधना समय

इस साधना को ग्रहण के समय विशेष कर इस ग्रहण के समय किया जा सकता है, साधना का ठीक समय रात्रि को ११ बजे से अर्द्धरात्रि के बाद २ बजे तक समझना चाहिए, इन तीन घण्टों में यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

साधना कौन करे

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, कोई भी विशेष बन्धन नहीं, वह स्वयं के लिए घट बना सकता है और चाहे तो किसी और के लिए भी इस अक्षय घट का निर्माण कर सकता है।

प्रयोग विधि

साधना समय से पूर्व साधक को चाहिए कि वह स्नान कर पीली धोती और साधिका पीली साड़ी धारण कर लें सामने पीला आसन बिछा दें और उत्तर या पूर्व की ओर मुंह कर शान्त भाव से बैठ जांय, अपने सामने पांचों वस्तुएं रख लें।

तदनुसार अपने सामने चावलों की ढेरी बना कर उस पर तांबे का कलश स्थापित करें और उसमें किसी भी चम्मच से लगभग १०८ बार दूसरे पात्र में से जल लेकर डालें, प्रत्येक बार 'ॐ पूर्ण कुम्भाय नमः' शब्द का उच्चारण करें, ऐसा करने पर इस बात का ध्यान रखें कि वह कलश आधे से अधिक जल से भर जाय।

फिर कलश के चारों ओर पांच कुंकुंम की बिन्दियां लगावें, प्रत्येक बिन्दी लगाते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

१-ॐ अक्षयपात्राय नमः, २-ॐ धन्वन्तर्यै नमः, ३-ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः, ४-ॐ पूर्णाय नमः, ५-ॐ पूर्ण कुम्भाय नमः।

फिर इस जल में रोकड़ा रुपया जिसे रुपये का सिक्का कहते हैं, उस पर कुंकुंम की बिन्दी लगा कर कलश में डाल दें और कलश के ऊपर एक नारियल रख दें, जो जटायुक्त होना चाहिए।

तत्पश्चात् निम्न मन्त्र की एक माला फेरनी चाहिए, इसमें **कमलगट्टा माला** का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

।। ॐ कुबेराय महालक्ष्मी प्रसन्नाय धन-धान्य
समृद्धि पूर्ण कुम्भाय श्रीं ह्रीं श्रीं नमः ।।

एक माला जप करने के बाद नारियल को हटा कर उसमें श्रद्धा सहित हिरण्य गर्भ कलश के जल में डाल कर पुनः नारियल को यथावत् रख देना चाहिए तथा एक माला निम्न मन्त्र की जप करनी चाहिए।

मन्त्र

।। ॐ अक्षयपात्राय श्रीं पूर्णकुम्भाय ह्रीं
कुबेराय श्रीं नमः ।।

इसके बाद कलश के सामने दूध का बना प्रसाद रखें और हाथ जोड़ कर निवेदन करें कि यह अक्षय घट मेरे जीवन में पूर्णता लावे, धन-धान्य समृद्धि दे और जीवन की जो भी इच्छाएं हैं वह पूरी करे।

इसके बाद साधक चाहे तो विश्राम कर सकता है, प्रातःकाल उठ कर उस दूध के प्रसाद को दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए और अक्षय घट को घर के पवित्र स्थान या पूजा स्थान में स्थापित कर दें, सप्ताह में, नित्य या बुधवार के दिन अक्षय घट में थोड़ा-थोड़ा जल डालते रहना चाहिए। ●

शांभवी दीक्षा

जीवन की दुर्लभ और महत्वपूर्ण दीक्षा

शांभवी दीक्षा जीवन की विशिष्ट दीक्षा है, जो उच्चकोटि के योगी और विद्वान हैं, वे ही इस शांभवी दीक्षा के महत्व को समझ सकते हैं।

कई कई वर्षों तक गुरु की सेवा करने के पश्चात् ही जीवन के उत्तरार्द्ध में साधकों या शिष्यों को शांभवी दीक्षा प्राप्त होती थी, वह दिन उनके जीवन का सौभग्यशाली दिन गिना जाता था, वह ही नहीं अपितु अन्य सभी साधक और शिष्य भी सोचते थे कि शायद हमारी जिन्दगी में भी कोई ऐसा दिन अवश्य आयेगा, हमारे पूर्वजों का पुण्य जरूर उदय होगा जब हमें भी गुरुदेव द्वारा शांभवी दीक्षा प्राप्त हो सकेगी।

शांभवी दीक्षा गुरु के प्राणों का साधनाओं से मन्थन की हुई क्रिया होती है, एक प्रकार से देखा जाय तो विशिष्ट साधनाओं की चेतना और ऊर्जा का प्राणों से सम्बन्ध साहचर्य बनता है, उसे "शांभवी" कहा जाता है। जब गुरु अपने शिष्य को हजारों लोगों की भीड़ में अपने सामने आसन पर बिठा कर उसे पवित्र और दिव्य बना कर "दिव्य पात क्रिया" से उसके प्राणों को चेतना प्रदान करता है, उसकी सुप्त कुण्डलिनी को जाग्रत करता है और अपनी दुर्लभ संचित साधनात्मक ऊर्जा में से विशिष्ट ऊर्जा शिष्य के नेत्रों के द्वारा उसके प्राणों में समाहित करता है, और ऐसा करते ही जिस प्रकार लोहे का टुकड़ा चुम्बक से घर्षण करने पर खुद चुम्बकीय बन जाता है, उसी प्रकार वह मूढ़ और सिद्धि-हीन शिष्य अचानक दिव्य और उदात्त बन जाता है, उसके पूरे शरीर में थिरकन प्रारम्भ हो जाती है, प्राणों में चेतना और हलचल उठने लगती है और उसे ऐसा अनुभव होने लगता है कि संसार की समस्त सिद्धियां उसके प्राणों में और शरीर में समाहित हो रही हैं, उसके चेहरे की रौनक बढ़ जाती है, उसकी वाणी में गम्भीरता आ जाती है, उसके नेत्रों में एक अग्नि स्फुलिंग पैदा हो जाती है, जिसके माध्यम से वह समस्त संसार को अपने नियन्त्रण में लेने की सामर्थ्य रखता है।

निश्चय ही शांभवी दीक्षा एक कठिन क्रिया है, परन्तु समर्थ गुरु अपने शिष्य पर प्रसन्न होकर ऐसा करता ही है, ऐसा करते ही शिष्य के लिए सब कुछ सम्भव हो जाता है, समस्त सिद्धियां उसके लिए सम्भव प्रतीत होती हैं और उसके प्राण गुरु के प्राणों से एकाकार होकर सही अर्थों में वह गुरुमय हो जाता है।

पशु जीवन भी क्या जीवन है और साधनात्मक जीवन का भी तब तक कोई मूल्य और महत्ता नहीं है, जब तक वह जीवन में कम से कम एक बार अपने गुरु से शाम्भवी दीक्षा प्राप्त न कर ले, वे 'माई के लाल' बिरले ही होते हैं जिनके जीवन में ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है, और जो अपने जीवन में शांभवी दीक्षा से सम्पन्न होकर विशिष्ट व्यक्तित्व बन जाते हैं। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्योछावर
भैरव साधना	१३	—	—
१-शत्रु बाधा निवारण प्रयोग	१५	काल भैरव गुटिका	१२०)रु०
		पांच अक्रान्त चक्र	६०)रु०
२-रोग नाशक प्रयोग	,,	काल भैरव महायन्त्र	१५०)रु०
३-मुकदमा वाद-विवाद विजय प्रयोग	१६	काल भैरव शंख	१५०)रु०
		एक नाग चक्र	३०)रु०
क्या देवी-देवता दर्शन देते हैं	१७	—	—
१-स्वप्नेश्वरी साधना	१८	स्वप्नेश्वरी यन्त्र-चित्र	१२०)रु०
२-यक्षिणी साधना	,,	यक्षिणी यन्त्र-चित्र	१२०)रु०
३-हनुमान सिद्धि प्रयोग	,,	हनुमान चित्र	१०)रु०
		रक्त चन्दन की मूर्ति	५१)रु०
		हनुमान विजय यन्त्र (ताबीज)	११०)रु०
४-कर्णपिशाचिनी साधना	१९	कर्णपिशाचिनी यन्त्र (ताबीज)	१२०)रु०
५-मणिभद्र अनुष्ठान	२०	मणिभद्र चेटक यन्त्र	१५०)रु०
		दो मधुरूपेण रुद्राक्ष	८०)रु०
विशेष लक्ष्मी साधनाएं	२५	—	—
१-अष्ट लक्ष्मी प्रयोग	२६	अष्ट लक्ष्मी यन्त्र	२१०)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
२-बाधा निवारण : शिव लक्ष्मी प्रयोग	२७	स्फटिक अथवा नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५०)रु०
		शंख माला	१८०)रु०
३-स्थिर लक्ष्मी प्रयोग	,,	२१ लक्ष्मी प्राकाम्य	१०५)रु०
		लक्ष्मी-गणपति यन्त्र-चित्र	२४०)रु०
		गुरु यन्त्र-चित्र	२४०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
४-ऋणमोचन लक्ष्मी प्रयोग	२८	लक्ष्मी यन्त्र-चित्र	१२०)रु०
		तीन मोतीशंख	१८०)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
५-कुबेर लक्ष्मी प्रयोग	२८	लक्ष्मी चित्र	१०)रु०
		कुबेर यन्त्र	२४०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
६-नित्य लक्ष्मी प्रयोग	,,	कनकधारा यन्त्र	१५०)रु०
माहेश्वरी तन्त्र प्रयोग	२९	माहेश्वरी यन्त्र	२१०)रु०
		छः षट् देवता चक्र	९०)रु०
		नौ पीठ शक्तिबीज	९०)रु०
		तांत्रोक्त काली हकीक माला	११०)रु०
सिद्ध बीसा यन्त्र प्रयोग	३३	त्रिलोह धातु यन्त्र	१०१)रु०
गीता मन्त्र अनुष्ठान	३५	गीता यन्त्र	१२०)रु०
अक्षय घट साधना	३७	हिरण्य गर्भ	१५०)रु०

प्रत्येक दिशा में तीन-तीन पत्ते रख दें, और प्रत्येक पत्ते पर एक-एक शक्ति चक्र स्थापित करते हुए पूजन करना है, ये शक्तियां हैं—

१-माया, २-कालरात्रि, ३-वटवासिनी, ४-गणेश्वरी, ५-कान्हा, ६-व्यापिका, ७-अलार्कवासिनी, ८-मायाराज्ञी, ९-मदनप्रिया, १०-रति, ११-लक्ष्मी, १२-कान्हेश्वरी।

इनके पूजन का क्रम तथा मन्त्र इस प्रकार से होंगे—

पूर्व दिशा में — ॐ मायायै नमः। ॐ कालरात्र्यै नमः। ॐ वटवासिन्यै नमः।

दक्षिण दिशा में — ॐ गणेश्वर्यै नमः। ॐ कान्हायै नमः। ॐ व्यापिकायै नमः।

पश्चिम दिशा में—ॐ अलार्कवासिन्यै नमः। ॐ मायाराज्ञै नमः। ॐ मदनप्रियायै नमः।

उत्तर दिशा में — ॐ रत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ कान्हेश्वर्यै नमः।

अब साधक अपने बाईं ओर थाली के बाहर एक चावल की ढेरी बना कर **जय विजय चक्र** स्थापित करें तथा दाहिनी ओर एक कलश पर एक नारियल स्थापित कर दें। दोनों के आगे एक-एक दीपक अवश्य जला दें। इस प्रकार कुल चार दीपक होंगे। अब अपने हाथ में **उत्पन्ना शक्ति फल** को लेकर उत्पन्ना देवी का ध्यान करें और बोलें कि हे देवी उत्पन्ना! मेरे जीवन में अमुक कमी (यहां अपनी इच्छा का नाम लें) है और इस कमी को दूर कर आप अपनी समस्त द्वादश शक्तियों के साथ जय विजय के साथ मेरे जीवन में प्रवेश करें मैं हर वर्ष उत्पन्ना एकादशी को आपका पूर्ण अनुष्ठान सम्पन्न करूंगा।

ऐसा बोल कर **'उत्पन्ना फल'** को प्रत्येक **'देवी शक्ति चक्र'** तथा **'जय विजय चक्र'** को स्पर्श कराएं, तत्पश्चात् इसे **'आनन्द मण्डल लक्ष्मी यन्त्र'** के आगे स्थापित कर दें और प्रसाद के रूप में केवल फलों का प्रसाद अर्पण करें, तत्पश्चात् पति-पत्नी उसी स्थान पर निम्न उत्पन्ना मन्त्र की अलग-अलग पांच माला का जप करें—

उत्पन्ना मन्त्र

॥ ऐं क्लीं सौः ॐ नमः उत्पन्ना इच्छा कामप्रदे सर्वसत्ववशंकरि
सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं ॥

इस मन्त्र की पूर्णता के पश्चात् थोड़ी देर मौन होकर उसी स्थान पर बैठें तथा पूजा में अर्पित किये हुए फलों का प्रसाद ग्रहण करें।

सायंकाल यही पूजा का क्रम पुनः सम्पन्न करना है तथा दिन भर में भोजन ग्रहण नहीं करना है, केवल दूध और फलाहार लें, सायंकाल पूजन कर देवी की आरती सम्पन्न कर अपना अनुष्ठान पूर्ण करें।

पूर्ण भक्तिभाव से जो यह अनुष्ठान सम्पन्न करता है उसके जीवन में शक्ति उत्पन्न होकर जीवन की कमियों को दूर करती है। ऐसा श्रेष्ठ अवसर तो वर्ष में एक ही बार आता है। ●

उत्पन्ना साधना पैकेट—२१०) रुपये।

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एम०आर०बे० : ३६६७/८६-८७

शिष्य के जीवन का स्वर्णिम दिवस

गुरुदेव के सान्निध्य में

कुबेर सिद्धि दिवस- धनत्रयोदशी

(दिनांक २३-१०-९२)

इस बार

गुरुधाम दिल्ली में सुसम्पन्न होगा

विलक्षण सिद्धि कल्प है यह लक्ष्मी साधना का

लक्ष्मी-गणेश-कुबेर—प्रत्यक्ष सिद्धि साधना शिविर

महासौभाग्य दिवस है शिष्य, साधक के लिए

क्योंकि

स्वयं गुरुदेव सम्पन्न कराएंगे लक्ष्मी गणपति कुबेर साधना

अपूर्व मन्त्रों का अनुष्ठान सम्पन्न करना है आप सब शिष्यों को

निमन्त्रण है पूज्य गुरुदेव का अपने शिष्यों को

साधना आयोजन स्थल—३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा नई दिल्ली-११००३५
फोन : ७१८२२४८

शिविर-साधना-सामग्री शुल्क—३५१)रु०

जिसमें इस रात्रिकालीन साधना की सामग्री, भोजन, आवास आदि का खर्च शामिल है।

यदि आप इस आयोजन में भाग लेना चाहते हैं. वे तत्काल फोन/पत्र द्वारा गुरुधाम दिल्ली में उपरोक्त पते पर सूचना दे दें, जिससे आपका स्थान आरक्षित किया जा सके।